Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : **editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org**

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-37
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 06 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 2017 तक
पौष कृष्ण तृतीया से पौष कृष्ण दशमी 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

भारत की जीत..... पृष्ठ- 3

दीर्घायु के लिए... पृष्ठ- 4

गौ सेवा एवं संर्वधन..... पृष्ठ- 5

इतिहास स्वयं को.... पृष्ठ- 9

जैसी करनी, वैसी.... पृष्ठ- 12

- धरती पर कम होते भगवान
- हिंदुत्व के मूल तत्वों को पहचानों
- गांधी जी हिन्दुओं के लिए पूजनीय कैसे?
- संस्कृत के पक्षधर थे बाबासाहेब
- क्या आणविक आयुधों व प्रक्षेपास्त्रों से लैस भारत-पाक के बीच चल रहा सांस्कृतिक वाक्युद्ध थमेगा? अथवा ज्वलनशील आत्मदाह को बढ़ावा दे सकता हैं?

बड़ी संख्या में आतंकवादी घुसपैठ के इंतजार में हैं, सेना सर्तक

आंतकी प्रशिक्षण शिविरों को नष्ट किया जाये–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

सेना के एक शीर्ष अधिकारी ने बताया कि नियंत्रण रेखा के पास बड़ी संख्या में आतंकवादी घुसपैठ करने के प्रयास में हैं लेकिन सुरक्षा बल इनके प्रयासों को विफल करने के लिए सतर्क है। १६वीं कोर के जनरल आफिसर कमांडिंग सरनजीत सिंह ने कहा सेना अलर्ट है और आतंकवादियों को घुसपैठ के प्रयास में सफल नहीं होने देंगी। लेफ्टिनेंट जनरल सिंह ने कहा लोचिंग पैड पर बडी संख्या में आतंकवादी इस ओर आने के शेष पृष्ठ 11 पर

पटाखों से प्रदूषण और अब हनुमान मूर्ति से अतिक्रमण, हिंदुओं के खिलाफ साजिश

हनुमानजी की मूर्ति को हटाने नहीं देंगे – हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

हर बार हिंदुओं और उनकी आस्था पर ही प्रहार क्यों हो रहा है। एनजीओ के माध्यम से एक साजिश रची जा रही है। दीपावली पर पटाखों से पूरे देश में खासकर एनसीआर में पूदषण हो रहा था। पटाखों पर रोक लगाकर क्यों प्रदूषण मुक्त रखा गया एनसीआर को। प्रदूषण के वास्तविक कारणों को दूर करने के बजाए सीधे हिंदुओं की आस्था पर प्रहार किया गया। इसी प्रकार अब अतिक्रमण के नाम पर १०८ फुट ऊंचे हनुमान जी की प्रतिमा को हटवाया जा रहा है। राष्ट्रीय राजधानी में अवैध निर्माण से क्षुब्ध दिल्ली हाई कोर्ट ने भीड़भाड़ कम करने के लिए स्थानीय अधिकारियों को सुझाव दिया कि मध्य दिल्ली में १०८ फुट ऊंचे हनुमान प्रतिमा को हवाई मार्ग से हटाने पर विचार करें ताकि इसके आस पास अतिक्रमण हटाया जा सके। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश गीता मित्तल और न्यायमूर्ति सी हरिशंकर की पीठ ने एक गैरसरकारी संगठन की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। एनजीओ ने महानगर के करोल बाग इलाके से अवैध निमार्णों और अतिक्रमणों को हटाने की मांग की है। इसने शेष पृष्ठ 10 पर

श्रीकृष्ण के उपदेश का दिन

महाभारत के धर्म और अधर्म, सत्य और असत्य के इस युद्ध में कौरवों और पांडवों की सेना जब आमने–सामने थी। अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण ने रथ को दोनों सेनाओं के मध्य आगे ला खड़ा कर दिया, जहाँ अर्जुन ने भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और अपने भाइयों, रिश्तेदारों को विरोधी खेमे में खड़ा पाया। अर्जुन की हिम्मत जवाब दे गई, तब उन्होंने कृष्ण जी से कहा कि अपने स्वजनों और बेगुनाह सैनिकों के अंत से हासिल मुकुट धारण कर मुझे कोई सुख हासिल नहीं होगा। अर्जुन पूरी तरह अवसादग्रस्त हो चुके थे। अपने अस्त्र–शस्त्र कृष्ण के सम्मुख भूमि पर रख उन्होंने सही मार्गदर्शन चाहा। और तब 'गीता' का जन्म हुआ। लगभग ४० मिनट तक श्रीकृष्ण और अर्जुन में जो संवाद हुआ, उसे महर्षि व्यास ने सलीके से लिपिबद्ध किया वही 'भगवद्गीता' है। अपने कहे को और स्पष्ट कर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि उसके शत्रु तो महज मानव शरीर हैं। अर्जुन तो सिर्फ उन शरीरों का अंत करेगा, आत्माओं का नहीं। हताहत होने के बाद सभी आत्माएँ उस अनंत आत्मा में लीन हो जाएँगी। शरीर नाशवान है लेकिन आत्मा अजर अमर है। आत्मा को किसी भी तरह से काटा या नष्ट नहीं किया जा सकता। तब श्रीकृष्ण ने परमतत्त्व की उस प्रकृति का दर्शन जिसमें अनंत ब्रह्मांड निहित है यानी 'विराट रूप' को अर्जुन के समक्ष प्रकट किया ताकि अर्जुन समझ सकें कि वह जो भी कर रहा है वह विधि निर्धारित है। यह भाग्य ही 'प्रकृति' है जिसकी रचना 'पुरुष' ने की है और सर्वव्यापी ही उसका इस्तेमाल करेगा। तब 'कर्मयोग' के इस सार को समझ अर्जुन युद्ध को तैयार हुए। अर्जुन को गीता का ज्ञान देकर कर्म का महत्त्व स्थापित किया इस प्रकार अनेक कार्यों को करते हुए एक महान युग परवर्तक के रूप में सभी का मार्गदर्शन किया। गीता में अर्जुन के मन में उठने वाले विभिन्न सवालों के रहस्यों को सुलझाते हुए श्रीकृष्ण उन्हें सही एवं गलत मार्ग का निर्देश प्रदान करते हैं। संसार में मनुष्य कर्मों के बंधन से जुड़ा है और इस आधार पर उसे इन कर्मों के दो पथों में से किसी एक का चयन करना होता है। इसके साथ ही परमात्व तत्त्व का विशद वर्णन करते हुए अर्जुन की शंकाओं का समाधान करते हैं व गीता का आधार बनते हैं। गीता आत्मा एवं परमात्मा के स्वरूप को व्यक्त करती है। कृष्ण के उपदेशों को प्राप्त कर अर्जुन उस परम ज्ञान की प्राप्ति करते हैं जो उनकी समस्त शंकाओं को दूर कर उन्हें कर्म की ओर प्रवृत्त करने में सहायक होती है। गीता के विचारों से मनुष्य को उचित बोध की प्राप्ति होती है यह आत्म तत्त्व का निर्धारण करता है उसकी प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। आज के समय में इस ज्ञान की प्राप्ति से अनेक विकारों से मुक्त हुआ जा सकता है। आज जब मनुष्य भोग विलास, भौतिक सुखों, काम वासनाओं में जकड़ा हुआ है और एक दूसरे का अनिष्ट करने में लगा है तब इस ज्ञान का प्रादुर्भाव उसे समस्त अंधकारों से मुक्त कर सकता है क्योंकि जब तक मानव इंद्रियों की दासता में है, भौतिक आकर्षणों से घिरा हुआ है, तथा भय, राग, द्वेष एवं क्रोध से मुक्त नहीं है तब तक उसे शांति एवं मुक्ति का मार्ग प्राप्त नहीं हो सकता।

उड़ी-नगरोटा के शहीदों के प्रति

कैसे सो जाते वीर पुरुष हो चिर प्रशान्त,
मानो निद्रा में डूब गये उनके तन–मन।
बन विमल चन्द्रिका कीर्ति थिरकती वसुधा पर,
प्रतिध्वनित कर रहे गौरव से उनको जन–मन।
प्रत्येक सुबह मधुमास सुशीतल कर प्रसार,
नीहार बिन्दु को पिरो मृदुल नव पल्लव पर।
कल्पनानीत श्यामल दूर्वादल अवनत हों,
करते प्रणाम मानो नेत्रों में आँसू भर।
उस नील–निलय की परियाँ करती हैं सिंगार,
मारती घण्टिका पर अपने कर बार–बार।
अव्यक्त मधुर ध्वनि स्वयं हृदय से निस्सृत हो,
गूँजते तभी उनके उर के वे तरल तार।
सम्मान शहीदों का कर लें, हो अभिनन्दन,
उनकी पावन स्मृति में हो गम्भीर घोष।
वह राष्ट्र कभी संत्रस्त नहीं हो सकता है,
नवयुवकों के हृदयों में हो जब नवल जोश।।

डॉ. कृष्ण कुमार त्रिपाठी

साप्ताहिक राशिफल

मेष - परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। इस सप्ताह कुछ नया करने का मन होगा लेकिन समय की कमी और व्यस्तता के कारण मन को मारकर बैठना होगा। परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। जो लोग साझे या सहयोग से कार्य कर रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

वृष - इस सप्ताह लम्बे समय से रूके हुये कार्यों में प्रगति होगी। योजनाओं को मूर्त रूप देने में बाधायें आयेंगी किन्तु निरन्तर प्रयास के आगे बाधाओं को भी हार मानना होगा। धार्मिक यात्रा के प्रबल योग हैं। धार्मिक आडम्बरों से बचें। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें।

मिथुन - इस सप्ताह कार्य व्यापार में वृद्धि व लगभग सभी तरह के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। भविष्य की योजनाएं बहुत सूझबूझ कर बनानी होगी। किसी मित्र व रिश्तेदार के कारण तनाव हो सकता है। सन्तान की ओर से सुखद समाचार मिलने का संकेत है।

कर्क - इस सप्ताह दिमाग पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। कुछ लोगों को घर–मकान व वाहन आदि के योग बन रहे हैं। स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी रखें। किसी नये कार्य को करने से पहले अपने जीवन साथी से विचार विमर्श अवश्य कर लें तभी आपको सफलता प्राप्त होगी।

सिंह - १२वें भाव का सूर्य आपके खर्चों में वृद्धि करा सकता है। आमदनी अठन्नी खर्चा रूपय्या वाली स्थिति बनी रह सकती है। कुछ लोगों को नींद से सम्बन्धित समस्या उत्पन्न हो सकती है। आर्थिक स्थिति पहले के मुकाबले मजबूत रहेगी।

कन्या - इस सप्ताह नौकरी वाले जातकों का प्रमोशन होने की सम्भावना है। इस राशि वालों के लिए लाभ भाव का सूर्य लाभकारी सिद्ध होगा। जिन लोगों को नये अनुबन्ध करने हैं, उन्हें थोड़ा सा सावधान रहने की जरूरत है। सरकारी तंत्र से सावधानी बरतें।

तुला- इस सप्ताह जो लोग कर्ज ब्याज आदि का कार्य करते उन्हें भी सावधान रहने की जरूरत हैं अन्यथा दोहरी समस्याएं खड़ी हो सकती हैं। विवाह योग्य व्यक्तियों के विवाह बन्धन में बंधने के योग बन रहे हैं।

वृश्चिक - इस सप्ताह कुछ लोंगों का कर्मो की अपेक्षा भाग्य ज्यादा साथ देगा। बहुत से लोगों के विवाह के योग बनेंगे। आर्थिक स्थिति में वृद्धि और रूके कार्यों में प्रगति होगी। नौकरी पेशा लोगों को पद प्रतिष्ठा आदि का लाभ होगा।

धनु - इस सप्ताह कुछ लोगों के सामाजिक कार्यो में बाधायें आयेंगी। बहुत से लोगों को माता–पिता बनने के अवसर प्राप्त होंगे। आमदनी में वृद्धि होगी। परन्तु विवादों से बचें। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। वाणी में मधुरता बनायें रखें अन्यथा क्रोध के कारण मानसिक तनाव उत्पन्न कर सकता है।

मकर - इस सप्ताह जो लोग कृत्रिम संसाधनों के क्षेत्र से जुड़े उन्हे अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। कार्यो को करने में गजब की तेजी आयेगी, जिससे मन प्रसन्न होगा। नोजवानों को मादक पदार्थो की आदत लग सकती है, अतः सावधानी रखें।

कुम्भ - इस सप्ताह आप ऑफिस के लोगों पर अपनी छाप छोड़ने का प्रयास करेंगे। स्वच्छ मन से किये गये कार्यो में सफलता प्राप्त होगी। छात्रों को घूमने–फिरने का अवसर मिलेगा। आपको लोगों का सहयोग पाने में काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है।

मीन - इस सप्ताह आप सफलता के लिए व्याकुल नजर आयेंगे। आपाधापी में किये गये कार्य में त्रुटि रह जाने के कारण बॉस की आप पर वक्र दृष्टि रह सकती है। जटिल व कठोर निर्णय लेने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्‍भगवत गीता

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना।
अन्ये साङ्ख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे।।

उस परमात्मा को कितने ही मनुष्य तो शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि से ध्यान के द्वारा हृदय में देखते हैं, अन्य कितने ही ज्ञानयोग के द्वारा और दूसरे कितने ही कर्मयोग द्वारा देखते है अर्थात् प्राप्त करते हैं।।२४।।

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणः।।

परन्तु इनसे दूसरे अर्थात् जो मन्दबुद्धिवाले पुरुष हैं, वे इस प्रकार न जानते हुए सुनकर ही तदनुसार उपासना करते हैं और वे श्रवणपरायण पुरुष भी मृत्युरूप संसार–सागर को निःसंदेह तर जाते हैं।।२५।।

यावत्सञ्जायते किञ्त्सत्त्वं स्थावरजङगमम्।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ।।

हे अर्जुन! यावन्मात्र जितने भी स्थावर–जङगम प्राणी उत्पन्न होते हैं, उन सबको तू क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के संयोग से ही उत्पन्न जान।।२६।।

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठान्तं परमेश्चरम्।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति।।

जो पुरुष नष्ट होते हुए सब चराचर भूतों में परमेश्वर को नाशरहित और समभाव से स्थित देखता है वही यर्थाथ देखता है।।२७।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 06 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 2017 तक

अध्यक्षीय

धरती पर कम होते भगवान

पहली भारतीय महिला डॉक्टर रुखमाबाई को उनकी १५३वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। पूरे देश ने दी। डॉ० रुखमाबाई राउत भारत की पहली महिला डाक्टर होने के साथ–साथ समाजसेवी भी थीं और उन्होंने अपनी चिकित्सा से कई लोगों को दूसरा जीवन दिया है। ऐसे सेवाभावी डाक्टरों का वैश्विक स्तर पर सम्मान देखकर खुशी होती है। लेकिन आज भारत का जो स्वास्थ्य परिदृश्य है, उसमें जनता के लिए लाचारी के अलावा कुछ नजर नहीं आता और हैरत की बात यह है कि देश बदलने, व्यवस्था बदलने का दावा करने वालों को इस पर शर्म भी नहीं आती है। सोशल मीडिया पर पिछले कुछ दिनों से एक सात साल की बच्ची आद्या सिंह की डेंगू से मौत पर चर्चा हो रही है। भारत में हर साल हजारों लोग मच्छरों के काटने, कुपोषण या जलजनित बीमारियों से मरते हैं। सरकार ने इसका स्थायी समाधान निकालने की जगह केवल आंकड़ें पेश करने की जिम्मेदारी उठा ली है कि इस साल डेंगू या मलेरिया से इतने लोग मरे। संवेदनाओं को दफन कर चुकी सरकार के लिए ऐसी अकाल मौतें कोई मुद्दा ही नहीं हैं। इसलिए आद्या की मौत भी भुला दी जाती। लेकिन आद्या के पिता के एक मित्र ने सोशल मीडिया पर आद्या के इलाज के लिए १६ लाख रुपयों का बिल की चर्चा की। यह बिल गुड़गांव के फोर्टिस अस्पताल द्वारा जारी किया गया, जहां १५ दिनों तक आद्या का इलाज चला लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका। सोशल मीडिया पर इस पोस्ट को हजारों लोगों ने शेयर किया और मामले ने तूल पकड़ा तो केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा को भी ट्वीट करना पड़ा कि हम सभी कदम उठाएंगे। गोरखपुर के सरकारी अस्पताल में कितने बच्चे आक्सीजन की कमी के कारण मर गए, ऐसे ही मामले अन्य प्रदेशों में भी हुए और लगातार हो रहे हैं। लेकिन मंत्री जी ने इनके लिए कहां कहा कि हम जरूरी कदम उठाएंगे। दरअसल सरकारी अस्पतालों में मरने वालों के परिजन अमूमन गरीब होते हैं और लाचार भी। उनके पास इतनी शक्ति और हिम्मत नहीं होती कि वे अपने साथ हुए अन्याय का खुलासा समाज के सामने कर सकें। कभी–कभार ऐसी खबरें आती हैं कि मृतक के परिजनों ने गुस्से में आकर अस्पताल में तोड़–फोड़ की, या डाक्टर को ही पीट दिया। ऐसे मामलों को कानून–व्यवस्था का सवाल बना दिया जाता है, लेकिन इस बात पर गहराई से विचार नहीं किया जाता कि आखिर यह नाराजगी कितनी लाचारी के बाद प्रकट हुई होगी। आद्या के पिता की भी लाचारी और भ्रष्ट व्यवस्था के लिए नाराजगी एक फेसबुक पोस्ट पर व्यक्त हुई है। फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीच्यूट में डेंगू के इलाज के लिए भर्ती आद्या को अगले दिन ही वेंटिलेटर पर रख दिया गया था, और ब्रेन हेमरेज होने की बात कही गई। कई दिनों तक आईसीयू में रखने के बाद भी उसकी हालत नहीं सुधरी और उसके पिता के सामने दो विकल्प रखे गए कि या तो वे इसी तरह उसका इलाज चलने दें, जिसमें बचने की कोई उम्मीद नहीं है या फिर लामा यानी लीव अगेंस्ट मेडिकल एडवाइस का रास्ता चुनें। आद्या के पिता को लगता है कि हास्पिटल वाले चाहते थे कि वेंटिलेटर वहां न हटाया जाए, क्योंकि ऐसे में यह आधिकारिक तौर पर दर्ज होता कि डेंगू पीड़ित आद्या की मौत इलाज के दौरान हुई। इसलिए आद्या को घर ले जाने की सलाह दी गई। एक मरीज और उसके परिजनों के प्रति संवेदनहीनता यहीं खत्म नहीं होती है। इसके बाद आद्या ने जो अस्पताल के कपड़े पहने थे, उससे लेकर जिस चादर में उसे लपेटा गया, उसकी कीमत भी उनसे वसूली गई। १५ दिनों के इलाज के दौरान चलने वाले विभिन्न टेस्ट और उनमें इस्तेमाल होने वाले उपकरणों का बिल भी जब आद्या के परिवार को थमाया गया तो कुल राशि बनी १६ लाख रुपए। इसे लूट न कहा जाए तो क्या कहा जाए। हालांकि फोर्टिस अस्पताल की ओर से बयान आया है कि उन्होंने मानक प्रक्रिया का पालन किया है। परिवार को लड़की की गंभीर स्थिति के बारे में पूरी जानकारी दी जाती रही। आद्या के पिता की परेशानियां यहीं खत्म नहीं हुई, उन्हें मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए भी कई तरह की मानसिक प्रताड़नाएं सहनी पड़ीं। एक पढ़े–लिखे सक्षम परिवार को जब लचर व्यवस्था का इस तरह शिकार बनना पड़ता है तो गरीब तबके की मुश्किलों का अनुमान लगाया जा सकता है। इन सबके लिए सड़कों पर उतर कर हंगामा मचाने वाले, गोरखधंधा चलाने वाले अस्पतालों, लुटेरे डाक्टरों के पुतले जलाने वाले समाज में नदारद हैं। लेकिन तथाकथित ऐतिहासिक गौरव पर मार–काट मचाने वाले पूरे देश में इस वक्त दिखाई दे रहे हैं। देश बदलने वाले का दावा करने वाले मोदी जी, क्या आप ये सब देख रहे हैं।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

भारत की जीत

नीदरलैंड के द हेग स्थित इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस यानी आईसीजे में भारत के दलवीर सिंह भंडारी को दोबारा जज के तौर पर चुन लिया गया है। पद्मभूषण जस्टिस भंडारी का अंतरराष्ट्रीय अदालत में मौजूदा कार्यकाल फरवरी २०१८ में समाप्त होगा और अब वे फिर अगले नौ सालों के लिए नियुक्त किए गए हैं। जस्टिस भंडारी से पहले १९८८–९० में भारत के पूर्व चीफ जस्टिस आरएस पाठक को भी इस पद पर नियुक्त किया गया था। इस १५ जजों वाली इस अदालत में जस्टिस भंडारी का निर्वाचन आसान नहीं था। उन्हें ब्रिटेन के उम्मीदवार क्रिस्टोफर ग्रीनवुड से कड़ी टक्कर मिल रही थी। लेकिन ११ चरणों के मतदान के बाद १२वें चरण के मतदान से ठीक पहले संयुक्त राष्ट्र में ब्रिटेन के स्थाई प्रतिनिधि मैथ्यू रिक्रोट ने संयुक्त राष्ट्र महासभा और सुरक्षा परिषद दोनों सदनों के अध्यक्षों को संबोधित करते हुए एक पत्र लिखा कि ब्रिटेन इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि अगले दौरों के चुनाव के साथ सुरक्षा परिषद और संयुक्त राष्ट्र महासभा का कीमती समय बर्बाद करना सही नहीं है। उनके प्रत्याशी जज क्रिस्टोफर ग्रीनवुड ने १५ सदस्यीय आईसीजे से अपना नाम वापस लेने का फैसला किया है। ब्रिटेन के इस अप्रत्याशित कदम के कारण जस्टिस भंडारी की जीत संभव हुई है। संयुक्त राष्ट्र महासभा और सुरक्षा परिषद दोनों मिलकर आईसीजे में जजों की नियुक्ति करते हैं। सभी १५ जजों की नियुक्ति ६ साल के लिए होती है और किसी भी उम्मीदवार को इसके लिए दोनों संस्थानों में बहुमत हासिल करना जरूरी है। भारत के प्रत्याशी यानी जस्टिस दलवीर भंडारी को महासभा का समर्थन मिल रहा था, जबकि सुरक्षा परिषद का रूझान ब्रिटिश प्रत्याशी की ओर था। सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य हैं, रूस, अमरीका, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन। ब्रिटेन जाहिर तौर पर अपने प्रत्याशी का समर्थन करता और शेष वीटो शक्ति संपन्न देश भी यही चाहते थे। क्योंकि अगर वीटोविहीन राष्ट्र इनके प्रत्याशी पर भारी पड़ जाए तो भविष्य में इनकी अंतरराष्ट्रीय प्रभुसत्ता को चुनौती मिल सकती है। और ऐसा ही हुआ भी। अब भारत की जीत से इन पांचों राष्ट्रों के दबदबे को थोड़ा खतरा तो हो ही गया है। शायद यही कारण है कि ब्रिटेन में अपने प्रत्याशी को वापस लेने के फैसले की आलोचना हो रही है। द गार्जियन जैसे प्रतिष्ठित अखबार ने इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्रिटेन की प्रतिष्ठा को झटका बताया है। वैसे ब्रिटेन प्रारंभ में कोशिश कर रहा था कि सुरक्षा परिषद को संयुक्त सम्मेलन के लिए राजी कर सके। ६६ साल पहले इसी तरह की जुगाड़ ब्रिटेन ने की थी। तब वह औपनिवेशिक शासक था और उसकी मर्जी चल गई, लेकिन इस बार ऐसा नहीं हो सका। सुरक्षा परिषद के बाकी सदस्यों को भी यह अनुमान था कि बहुमत के खिलाफ जाने का निर्णय उनकी प्रतिष्ठा के लिए ठीक नहीं होगा। अमूमन संरा महासभा में जिसका समर्थन अधिक होता है, वही आईसीजे के लिए चुना जाता है। दूसरी बात यह भी है कि अगर संयुक्त सम्मेलन बुलाने जैसा कोई प्रस्ताव रखा जाता, तब सुरक्षा परिषद के सदस्यों को गुप्त मतदान की जगह खुले तौर पर अपना वोट देना पड़ता और यह जाहिर हो जाता कि कौन से देश भारत का मित्र होने का दावा करने के बावजूद उसके खिलाफ वोट दे रहे हैं। सुरक्षा परिषद का कोई भी देश इसमें असहज स्थिति में आ जाता। ब्रिटेन के स्वेच्छा से बाहर होने का एक कारण यह भी बताया जा रहा है कि ब्रेक्जिट के बाद भारत व्यापार में उसका बड़ा साझीदार बनकर उभरा है और इसलिए वह भारत के साथ कोई गलत चाल नहींचलना चाहता था। वैसे भारत पर भी अपने उम्मीदवार को वापस लेने का दबाव था, लेकिन संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि सैयद अकबरुद्दीन के मुताबिक भारत ने ऐसे किसी भी समझौते से इंकार किया क्योंकि जिस उम्मीदवार को महासभा सदस्यों का जबरदस्त समर्थन मिल रहा हो, वही आगे बढ़ने के लिए उपयुक्त उम्मीदवार हो सकता है। अब भारत की जीत पर ब्रिटेन का कहना है कि वह करीबी दोस्त भारत की जीत से खुश है। १९४५ में अंतरराष्ट्रीय अदालत की स्थापना के बाद से ऐसा पहली बार होगा जब इसमें कोई ब्रिटिश जज नहीं होगा। जहां तक भारत के लिए भंडारी की जीत के महत्व की बात है तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा बढ़ने के साथ–साथ यह जीत इस लिहाज से बेहतरीन है, कि पाकिस्तान में बंद कुलभूषण जाधव का मामला भी अंतरराष्ट्रीय अदालत में है। कुछ समय पहले जब आईसीजे ने पाकिस्तान द्वारा जाधव की फांसी पर रोक लगाई थी, तब जजों के उस पैनल में जस्टिस भंडारी भी थे। आईसीजे में अपने पहले कार्यकाल के दौरान भंडारी ने समुद्री विवाद, अंटार्कटिका में व्हेल पकड़ने, नरसंहार के अपराध, परमाणु निरस्त्रीकरण, आतंकवाद के वित्तपोषण और सार्वभौमिक अधिकारों का उल्लंघन आदि ११ मामलों में अपना व्यक्तिगत निर्णय दिया है। उनका भावी कार्यकाल कुलभूषण जाधव मामले समेत तमाम अंततराष्ट्रीय मुकदमों में प्रभावी साबित होगा, यही उम्मीद की जानी चाहिए।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

दीर्घायु के लिए बादाम

सुमन शर्मा

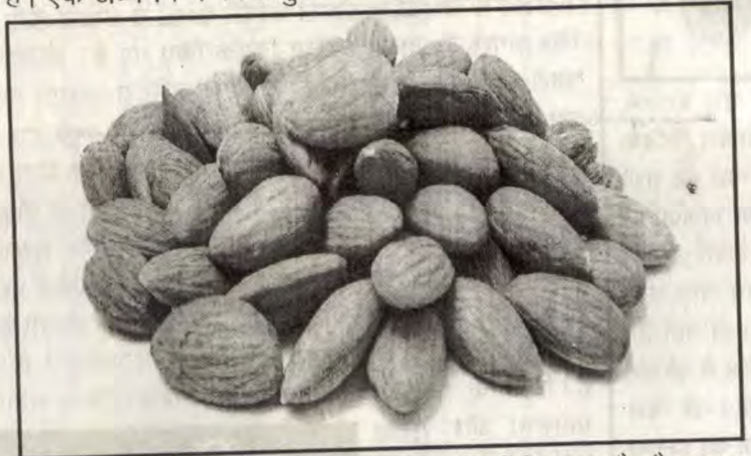

बादाम का चाहे जिस रूप में सेवन किया जाए, उसके चिकित्सकीय गुणों का पूरा लाभ व्यक्ति को मिलता है। बादाम को संस्कृत में वाताद, वातवैरी आदि, हिन्दी, मराठी, गुजराती व बांग्ला में बादाम, फारसी में बदाम शीरी, बदाम तल्ख, अंग्रेजी में आलमंड और लैटिन में एमिग्ड्रेलस कम्युनीज कहते हैं। संतुलित भोजन के प्रमुख स्रोत बादाम को सबसे सेहतमंद मेवा बताया गया है। बादाम मस्तिष्क और स्नायु प्रणालियों के लिए पोषक तत्त्व है। यह बौद्धिक ऊर्जा बढ़ाने और दीर्घायु बनाने वाला है।

यूनानी चिकित्सा में बादाम को, खासतौर से बादाम–तेल को पूरे परिवार के लिए स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक माना जाता है। बादाम में मूल रूप से प्रोटीन (१६.५ प्रतिशत) और तेल (४१ प्रतिशत) का मिश्रण होता है। आयुर्वेद में इसको बुद्धि और नसों के लिए गुणकारी बताया गया है। एक आउंस (१७ ग्राम) बादाम में १६० कैलोरी होती हैं, इसलिए यह शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है। लेकिन बहुत अधिक खाने पर मोटापा भी बढ़ा सकता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट बहुत कम होता है। इस कारण से बादाम से बना केक या बिस्कुट, आदि मधुमेह के रोगी भी ले सकते हैं। इसमें कोलेस्ट्रॉल नहीं होता है।

बादाम का फाइबर पाचन में सहायक होता है और हृदय रोगों से बचने में सहायक रहता है। बादाम हार्ट अटैक से होने वाली मौत के खतरे को लगभग ३० फीसदी तक घटा देते हैं। एक अध्ययन में स्पष्ट हुआ है कि बादाम के सेवन से रक्त में कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम होता है। बादाम में पाया जाने वाला फाइबर, ओमेगा–३ फैटी एसिड और विटामिंस बुरे कोलेस्ट्रॉल को घटाने और अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाने में सहायक होते हैं। उच्च कोलेस्ट्रॉल हृदय रोग और दिल की धमनियों में रुकावट सहित कई प्रकार के रोगों का एक कारक है। इस समस्या में बादाम मदद कर सकता है।

बादाम में सोडियम नहीं होने से उच्च रक्तचाप रोगियों के लिए भी लाभदायक रहता है। मीठे बादाम तेल के सेवन से मांसपेशियों में दर्द जैसी तकलीफ से तत्काल आराम मिलता है। शुद्ध बादाम तेल तनाव को दूर करता है। दृष्टि पैनी करता है और स्नायु के दर्द में भी राहत दिलाता है। विटामिन डी से भरपूर बादाम तेल बच्चों की हड्डियों के विकास में भी योगदान करता है। बादाम को शरीर में प्रतिरक्षा प्रणाली के कार्य को बनाए रखने के लिए जाना जाता है क्योंकि इसमें जिंक होते हैं। बादाम में विटामिन बी–६ जैसे पोषक तत्त्व होते हैं जो कि मस्तिष्क को बढ़ावा देते हैं। बादाम में पाया जाने वाला ओमेगा–३ और ओमेगा–६ एसिड बौद्धिक स्तर को बढ़ाने में मदद और मैग्नीशियम मस्तिष्क में तंत्रिकाओं को मजबूत करने का काम करता है। स्मरण शक्ति को अच्छा बनाए रखने के लिए बादाम को उपयोगी माना जाता है। बादाम का सेवन अल्जाइमर और अन्य मस्तिष्क संबंधी रोगों को दूर करने में मदद करता है। रोजाना सुबह पाँच बादाम भिगोकर खाने से दिमाग तेज होता है।

अध्ययन से यह भी पता चला है कि बादाम खाने से कोलोरेक्टल कैंसर, इंडोमेट्रियल कैंसर और पैंक्रिएटिक कैंसर का जोखिम कम होता है। लेकिन अन्य प्रकार के कैंसर और टाइप–२ मधुमेह के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता है। माइग्रेन के रोगियों के लिए बादाम बहुत फायदेमंद होती है। रोजाना १०–१२ नग बादाम का सेवन लाभकारी माना जाता है। बादाम दिमाग से संबंधित रोगों को जड़ से खत्म करता है। बादाम प्रोटीन, मैग्नीशियम, पोटेशियम, जिंक, आयरन और फाइबर का भी अच्छा सोर्स है। मैग्नीशियम प्रभावी ढंग से विभिन्न माइग्रेन सक्रियताओं का मुकाबला कर सकता है क्योंकि यह रक्त शर्करा और रक्तचाप के स्तर को नियंत्रित करता है।

हाल ही में हुए शोध में यह बात सामने आई है कि बादाम वजन कम करने में भी सहायक है। शोध में बताया गया है कि रोजाना बादाम की एक निश्चित मात्रा वजन घटाने में मददगार साबित होती है। भीगा हुआ बादाम एंटीऑक्सीडेंट का भी अच्छा स्रोत है। यह मुक्त कणों के नुकसान से बचाकर उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को रोकता है। भीगे बादाम में विटामिन–बी१७ और फोलिक एसिड कैंसर से लड़ने और जन्म दोष को दूर करने के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। भीगा हुआ बादाम पाचन में भी मदद करता है। रात में पानी में भिगोकर सुबह छिलका उतारकर खाने से पढ़ने वाले बच्चों के लिए तो यह बहुत ही फायदेमंद सिद्ध होता है। बादाम खाना खाने के बाद शुगर और इंसुलिन का लेवल बढ़ने से रोकता है। जिससे डायबिटीज से बचा जा सकता है।

बादाम रक्तचाप के लिए भी अच्छे होते हैं। एक अध्ययन के अनुसार बादाम का सेवन करने से ब्लड में अल्फा टोकोफेरॉल की मात्रा बढ़ जाती है, जो किसी के भी रक्तचाप को बनाये रखने के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। अध्ययन से यह भी पता चला कि नियमित रूप से बादाम खाने से ब्लड प्रेशर नीचे लाया जा सकता है। बादाम एक बहुत ही शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट एजेंट है, जो एलडीएल कोलेस्ट्रॉल के ऑक्सीकरण को रोकने में मदद करता है। बादाम के ये गुण दिल को स्वस्थ रखने और पूरे हृदय प्रणाली को नुकसान और ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस से बचाने में मदद करता है।

कोढ़ में खाज

'सबका' के बोए कांटों को, चलो निकाले मिलकर आज।
हमें मिटानी ही होगी अब, काश्मीर की कोढ़ में खाज।
समझ रहे तो काश्मीर को, अपने अब्बा की जागीर।
उन्हें दिखानी ही होगी अब, उनकी अपनी ही तस्वीर।
जो जन्नत से बलात्कार, कर रहे चला–धौंस के तीर–
साबित करना है गर हुई बगावत कहाँ गिरेगी गाज।
गांधी नेहरू की गलती अब, और अधिक क्यों करे वहन।
निजी स्वार्थ में काश्मीर–तीन सौ सत्तर में किया रहन।
प्राणों की कीमत देकर भी, चलो छुड़ाएं करें यतन–
घुट–घुट जीने से अच्छा, तख्त मिलें या पाएँ ताज।
चुन–चुनकर मारे सेनाएँ जो भी हैं घर के गद्दार।
बागी तेवर नेताओं के, सहन नहीं होंगे अब यार।
एक बार करना ही होगा, काश्मीर में आरम्–पार–
सेना को दो छूट भून दें, गोली से हर पत्थरबाज।
काश्मीर से अन्य प्रान्त की, भांति हो व्यवहार हितेश।
किसी तरह की भी क्यों उसको, दी जाएँ सुविधाएँ विशेष।
कायरता से बातचीत से, सुलझ नहीं सकता यह क्लेश–
पाकिस्तान चले जाएँ वह, जो भी होते हों नाराज।
काश्मीर में हर भारत–वासी को हो यकसाँ अधिकार।
वहाँ खरीदे सम्पति या करे वहाँ रहकर व्यापार।
साम, दाम से दंड, भेद से हो इस गलती का उपचार–
व्यर्थ हुआ है काश्मीर को, अब तक जो भी दिया खिराज।

हितेश कुमार शर्मा।

गंगाजल पर वैज्ञानिकों के मत

- वैज्ञानिक परीक्षणों से पता चला है कि गंगाजल से स्नान करने तथा गंगाजल को पीने से हैजा, प्लेग, मलेरिया तथा क्षय आदि रोगों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इस बात की पुष्टि के लिए एक बार डॉ. हैकिन्स, ब्रिटिश सरकार की ओर से गंगाजल से दूर होने वाले रोगों के परीक्षण के लिए आये थे। उन्होंने गंगाजल के परीक्षण के लिए गंगाजल में हैजे के कीटाणु डाले। हैजे के कीटाणु मात्र ६ घंटे में ही मर गये। और जब उन कीटाणुओं को साधारण पानी में रखा गया तो वह जीवित होकर अपने असंख्य में बढ़ गया। इस तरह देखा गया कि गंगाजल विभिन्न रोगों को दूर करने वाला जल है।
- फ्रांस के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. हैरेन ने गंगाजल पर वर्षो अनुसंधान करके अपने प्रयोगों का विवरण शोधपत्रों के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने आंत्र शोध व हैजे से मरे अज्ञात लोगों के शवों को गंगाजल में ऐसे स्थान पर डाल दिया, जहाँ कीटाणु तेजी से पनप सकते थे। डॉ. हैरेन को आश्चर्य हुआ कि कुछ दिनों के बाद इन शवों से आंत्र शोध व हैजे के ही नहीं बल्कि अन्य कीटाणु भी गायब हो गये। उन्होंने गंगाजल से बैक्टीरियासेपफेज नामक एक घटक निकाला, जिसमें औषधीय गुण थे।
- इंग्लैंड के जाने–माने चिकित्सक सी.ई. नेल्सन ने गंगाजल पर अन्वेषण करते हुये लिखा कि इस जल में सड़ने वाले जीवाणु ही नहीं होते। उन्होंने महर्षि चरक को उद्धत करते हुए लिखा कि गंगाजल सही मायने में पथ्य है।
- रूसी वैज्ञानिकों ने हरिद्वार एवं काशी में स्नान के उपरांत १६५० में कहा था कि उन्हें स्नान के उपरांत ही ज्ञात हो पाया कि भारतीय गंगा को इतना पवित्र क्यों मानते हैं।
- गंगाजल की पाचकता के बारे में ओरियंटल इंस्टीट्यूट में हस्तलिखित आलेख रखे हैं। कनाडा के मैकिलन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. एम.सी. हैमिल्टन ने गंगा की शक्ति को स्वीकारते हुए कहा कि वे नहीं जानते कि इस जल में अपूर्व गुण कहाँ से और कैसे आये। सही तो यही है कि चमत्कृत हैमिल्टन वस्तुतः समझ ही नहीं पाये कि गंगाजल की औषधीय गुणवत्ता को किस तरह प्रकट किया जाये।
- आयुर्वेदाचार्य गणनाथ सेन, विदेशी यात्री इब्नबतूता, वरनियर, अंग्रेज सेना के कैप्टन मूर, विज्ञानवेत्ता डॉ. रिचर्डसन आदि सभी ने गंगा पर शोध करके यही निष्कर्ष दिया कि यह नदी अपूर्व है।

गौ सेवा एवं संवर्धन

✍ डॉ. किशन कछवाह

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यतः किंचित परं स्मृतम्।।

गायें स्वर्ग की सीढ़ी हैं, गायें स्वर्ग में भी पूजनीय हैं, गायें समस्त मनोवांछित वस्तुओं को देने वाली हैं। अतः गौओं से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ नहीं है।

हमारे गर्भाधान संस्कार से लेकर अंतिम संस्कार तक ऐसा एक भी संस्कार नहीं है जिसमें गो प्रदत्त पदार्थ और गोदान की आवश्यकता न होती हो। सनातन धर्म में यह चली आ रही मान्यता है कि मृत्यु के उपरान्त जो वैतरणी नदी पार करनी पड़ती है उसे गौ की पूँछ पकड़कर ही पार किया जा सकता है। इससे समझा जा सकता है कि न केवल इहलोक वरन् उस दूर लोक तक उसके माध्यम से मार्ग प्रशस्त होता है।

"गावो विश्वस्य मातरः।" गौ समस्त विश्व की माता है। गौ के शरीर में तैंतीस करोड़ देवता निवास करते हैं। मातरः सर्वभूतानानम् गावः सर्वसुख प्रदाः — गायें सब प्राणियों को सब प्रकार का सुख देने वाली मातायें हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद अथर्ववेद में भी इस माता के महत्त्व को वर्णित किया गया है। भगवान कृष्ण की गौ–सेवा, महाराजा दिलीप की नन्दिनी गाय की सेवा–पूजा के उल्लेखों से उस महत्त्व को समझा जा सकता है। शिव मंदिरों में उपस्थित नंदी की मूर्ति भी वही संकेत देती है। गोस्वामी तुलसीदास, संत एकनाथ जैसे संतों ने भी भागवत धर्म में गौ सेवा का विशेष स्थान प्रतिपादित किया है। पूज्य देवरहा बाबा ने तो यहाँ तक कहा कि जब तक गोमाता का रुधिर भूमि पर गिरता रहेगा, कोई भी धार्मिक तथा सामाजिक अनुष्ठान सफल नहीं होगा।

भारतीय एवं हिन्दू संस्कृति के प्रमुख प्रतीकों एवं तत्त्वों में 'ग' अक्षर से निर्मित प्रमुख तत्त्व हैं—गौ, गंगा तथा गायत्री मंत्र। गौ और गौवंश जिसके अंतर्गत गौ–संतति (नर–मादा) आते हैं, भारतीय जीवन में इनका धार्मिक, आर्थिक, राष्ट्रीय एवं राजनैतिक महत्त्व है। यहाँ तक कि इनके औषधि महत्त्व को भी ओझल नहीं किया जा सकता। गौ–दुग्ध और गौ–मूत्र और गोबर का भी विशेष महत्त्व है। कृषि के क्षेत्र में गोबर की खाद को अत्युत्तम माना जाता है। गोबर की खाद एन्टीबायटिक होती है। गोबर और गौमूत्र पर देश–विदेशों में अनेक अनुसंधान हुए हैं। औषधियाँ और रासायनिक सामग्री के साथ अब तो बिजली और भोजन पकाने वाली गैस के उत्पादन का काम भी बहुत आगे बढ़ गया है।

दूध देने वाले पशुओं में गाय का महत्त्व सर्वोपरि है। गाय का दूध ही सर्वोत्तम माना जाता है। पंचगव्य (अमृत तुल्य) ही नहीं गाय के दुग्ध में पाये जाने वाले सभी द्वादश गव्य पदार्थों को जनहितकारी माना गया है। कृषि एवं गौ पालन पर भारतीय ग्रामीण व्यवस्था का ढाँचा खड़ा हैं इसके कारण गाय एवं उसके समस्त उत्पाद अत्यंत उपयोगी होते हुए भी अल्प मात्रा में व्यय करने पर भी सुलभ हो जाते हैं। गौ दुग्ध में ६ प्रकार के विटामिन्स पाये जाते हैं तथा चार प्रकार के फास्फोरस, यौगिक, २५ प्रकार के धातु तत्त्व, १६ प्रकार के नाइट्रोजन तत्त्व, २१ प्रकार के एमिनो एसिड, ११ प्रकार के फेटी एसिड और दो प्रकार की शर्करा भी इसमें समाविष्ट है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान ही महात्मा गाँधी ने कहा था कि—"मैं गोरक्षा के प्रश्न को स्वराज्य के प्रश्न से भी ज्यादा महत्त्व का समझता हूँ क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है और किन्हीं भी परिस्थितियों में भारत से कृषि और कृषि की परंपरा को समाप्त नहीं किया जाना चाहिए। प्रकृति से खिलवाड़ अर्थात् विश्व का समूल विनाश है। यदि गाय के आर्थिक महत्त्व पर विचार किया जाये तो हम देखते हैं कि हमारी कृषि का आध ार आज भी गौवंश ही है। ग्रामीण परिवहन का एक बड़ा भाग जहाँ बैलगाड़ी पर निर्भर है वहीं देहाती ईंधन का अधिकांश भाग गोबर पर निर्भर है। ग्रामीण पिछड़ा वर्ग और वनवासियों की आय का साध ान भी किसी न किसी रूप में गौवंश से जुड़ा हुआ है ही। यह भी सही है कि गौवंश से जुड़ी ऊर्जा पर्यावरण हितैषी भी है।

गाय के गोबर से प्राप्त खाद रासायनिक खादों की तुलना में पाँच गुना अधिक लाभ पहुँचाने वाली है और मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने वाली है जबकि रासायनिक खाद के लगातार उपयोग से खेती की भूमि क्षारीय होती जा रही है तथा उसके ऊसर होने की संभावनाओं में भी वृद्धि होती जा रही है। यह अत्यंत ध यान देने योग्य तथ्य है कि यदि गौवंश का हमारे द्वारा संवर्धन होगा तो गौबरगैस की ऊर्जा प्राप्त होगी, गोबर गौमूत्र से गाँव की भूमि उर्वर होगी। वहीं गाय का दूध स्वस्थ जीवन प्रदान करेगा। गौशाला केन्द्रित ग्रामोद्योग को रोजगार उपलब्ध होगा और गोबर केन्द्रित कृषि व्यवस्था सबको पौष्टिक भोजन उपलब्ध करायेगी। भारतीय कृषि को मजबूत आधार प्रदान करने से बिगड़ते पर्यावरण को भी संतुलित करने में मदद मिलेगी।

आयुर्वेद में 'गौमूत्र' को सर्व रोगनाशक बताया गया है। कैंसर जैसे भयानक रोग को भी ठीक कर देने की उसमें क्षमता है। जिगर, तिल्ली और गुर्दे की बीमारी को दूर करने के लिए भी उसमें प्रभावी आयुर्वेदिक दवायें बनाई जाती हैं। गौमूत्र आध्यात्मिक, शारीरिक एवं मानसिक रोगों के उपयोग के लिए रामबाण औषधि है। सारांश यह है कि गौवंश चलता–फिरता औषधालय है। अतः इन तमाम उपयोगिताओं को देखते हुए "घर–घर गाय, ग्राम ग्राम गौशाला" — यही है हमारी निरोग शाला। गाँवों में यथा सामर्थ्य सब घरों में कम से कम एक देशी गाय पालने की पहल होनी चाहिए।

महाभारत में उल्लेख मिलता है कि गाय के गोबर में आठ ऐश्वर्यों वाली लक्ष्मी का सतत वास रहता है। इसके स्नान से आज भी प्रदूषण, रेडिएशन तथा संक्रमण का भय नहीं रहता। त्वचा के रोग नष्ट हो जाते हैं, रक्त में बढ़ी हुई उष्णता शांत हो जाती है। शुक्ल यजुर्वेद में कहा गया है कि "गौस्तु मात्रा न विद्यते" — गाय की कोई उपमा नहीं है। तात्पर्य यह है कि गौसंरक्षण एवं संवर्धन के प्रयास हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बना सकते हैं जिससे समूचे देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी।

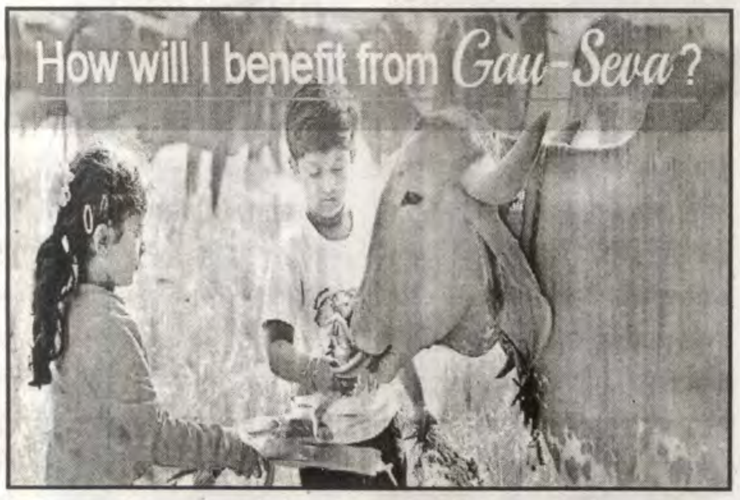

व्रतोत्सव प्रदर्शिका

पौष शुक्लपक्ष

व्रत, पर्व, त्यौहार (उत्सव)	तिथि	वार	दिनाँक
❖ इष्टिः, संदिग्ध चन्द्रदर्शन	१	मंगलवार	१६.१२.२०१७
❖ स्पष्ट चन्द्रदर्शन मु० ४५, खिचड़ीमहोत्सव प्रारम्भ वृन्दावन,	२	बुध्सवार	२०.१२.२०१७
❖ रविउस्सानी ४, यतीन्द्रसूरिपूण्यः, त्रिःस्तुति जैन, शिशिर ऋतु प्रारम्भ, रवि योग १६:१७ से	३	वीरवार	२१.१२.२०१७
❖ भद्रा ०३:१० से २२:२२ तक, राष्ट्रिय पौषारम्भः र०यो० १६:१० तक, रविउत्तरायणे, दैत्यों का दिन देवों की रात्रि, स०सि०यो० १६:१० तक	४	शुक्रवार	२२.१२.२०१७
❖ पंचक प्रारम्भ ०८:२६, राष्ट्रिय किसान दिवस छप्पन भोग गरूड़ागोविन्द मथुरा, र०यो० २१:४२ से	५	शनिवार	२३.१२.२०१७
❖ राष्ट्रिय उपभोक्तादिवस, र०यो० २३:४५ तक	६	रविवार	२४.१२.२०१७
❖ भद्रा २६:४४ से, श्री राजेन्द्रसूरिजन्म पुण्यः, त्रिःस्तुति (जैन), गुरू गोविन्दसिंह प्रकाशोत्सव, श्रीनन्दसिंह जयन्ती, क्रिसमसडे, बड़ादिन, ईसाजयन्ती, पं० मदनमोहनमालवीय जयन्ती	७	सोमवार	२५.१२.२०१७
❖ भद्रा १४:४३ तक, र०यो० २५:४६ से स० सि० यो०, २५:४६ तक, जोड़मेला (पंजाब)	८	मंगलवार	२६.१२.२०१७
❖ पंचक समाप्त २५:३६, र०यो०	६	बुधवार	२७.१२.२०१७
❖ शाम्बदशमी (उड़ीसा) जिनानंदसागर पुण्यः, खरतरगच्छ जैन, र०यो० २४:३७ तक स०सि०यो० २४:३७ तक	१०	वीरवार	२८.१२.२०१७
❖ भद्रा ११:०६ से २१:५५ तक, पुत्रदाएकादशी सर्वेषाम्, मन्वा, र०यो० ०७:१७ से २२:५५ तक	११	शुक्रवार	२६.१२.२०१७
❖ प्रदोषव्रत, स०सि०यो०अ०सि०यो० २०:३८ से	१२/१३	शनिवार	३०.१२.२०१७
❖ ग्यारहवीं शरीफ, न्यू–ईयर–इव, र०यो० १७:५३ से, रोहिणीव्रत	१३	रविवार	३१.१२.२०१७
❖ भद्रा ११:४५ से २१:४६ तक, अन्वा चन्द्रोदयी पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत, र०यो०, स०सि०अ०सि०यो० १४:५२ तक	१४/१५	सोमवार	०१.०१.२०१८
❖ इष्टिः, पौषीपूर्णिमा, माघस्नानारम्भः, देवीशाकम्भरी जयन्ती, मेला मंढ़ार देवी सतारा (महाराष्ट्र), प्रतिपदाक्षयः, काशिस्थ दशाश्वमेघघाट स्नानारम्भ	१५	मंगलवार	०२.०१.२०१८

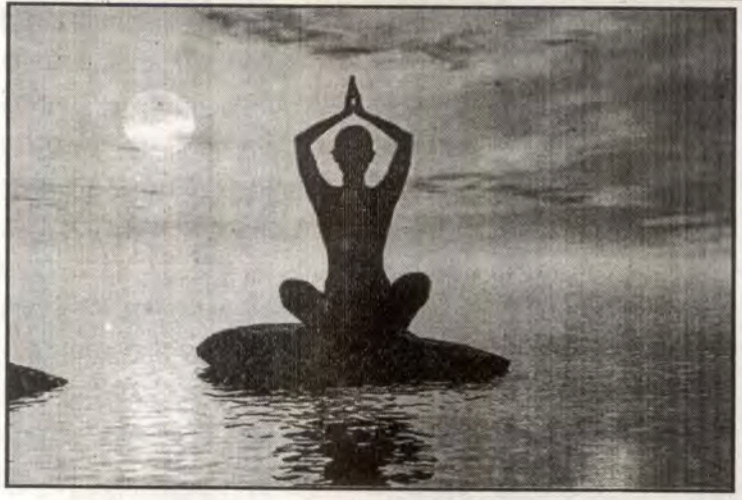

हिंदुत्व के मूल तत्वों को पहचानों

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

हिंदुत्व के मूल तत्व और सिद्धांतों की अवहेलना करके वर्षो से राष्ट्रीय हितों को आहत किया जाना प्रायः सामान्य हो गया है। देश की प्राचीन संस्कृति व सभ्यता और अपने ही प्रेरणाप्रद व आदर्श महापुरुषों के विरुद्ध नकारात्मक वातावरण बनाना प्रगतिशीलता बनता जा रहा है। जबकि ऐसे अन्यायों के विरुद्ध हिंदुओं के आक्रोशित होने को अनुचित माना जाता है। लेकिन हमारा धर्म ऐसे अन्याय सहने को भी पाप कर्म ही मानता है।

क्या किसी षडयंत्र के अंतर्गत केवल अहिंसा व सहिष्णुता आदि सह्रदयता का पाठ हमको व हमारे पिता, दादा, पितामाह आदि पूर्वजों को शताब्दियों से पढ़ाया जाता रहा। वास्तव में मुगल काल के आरंभ से ही धीरे धीरे हिंदुओं को साधारणतः सहिष्णुता, अहिसंक, उदारता व अतिथि देवो भवः आदि विशेष का पाठ पढ़ाया गया । यहां तक कुछ अनुचित नही था। परंतु हम अपने स्वाभिमान को खोकर और अपने अस्तित्व को संकट में डाल कर इन सदगुणों को ढोते रहें तो क्या यह न्यायसंगत कहलाया जा सकता है? हम अपनी आस्थाओं के प्रतीकों, मंदिर–मठो और तीर्थ स्थलों के साथ साथ देवी–देवताओं के मान–अपमान के प्रति भी सजग व सतर्क न रहें तो ये हमारी कैसी सहिष्णुता थी? जब हम अपने ऋषि–मुनियों और आचार्यो के ज्ञान–विज्ञान को भी सुरक्षित न रख सकें और अपनी प्राचीन धरोहरों को ध्वस्त होते देखते रहें तो क्या ऐसे में अहिंसात्मक बने रहना उचित था ? जब हमारी अरबो– खरबो की सम्पदा को लूटा जाता रहा और लाखो करोड़ो हिंदुओं का बलात धर्मातरण और नरसंहार किया जाता रहा तो भी हम भीरु और कायर बन कर सर्वधर्म समभाव से जुड़े रहें, क्यों? क्या यह सत्य नही है कि इस प्रकार अत्याचारी व अमानवीय कुकृत्यों द्वारा शताब्दियों से हिन्दू जनमानस का मनोबल तोडा जाता रहा? विभिन्न आलोचकों के पक्ष–विपक्ष में विचार हो सकते है, परंतु इतिहास साक्षी है और प्रमाण स्वरुप सन ७१२ के बाद मुगल व ब्रिटिश शासकों द्वारा हमारे सांस्कृतिक गौरव के पतन की आक्रोशित करने वाली गाथा का व्यापक ऐतिहासिक वृतांत सर्वविदित है। इसको झुठलाया नहीं जा सकता। हमें अपनी दासता और पतन का विस्तृत इतिहास पढ़ाया गया। हमारे इस इतिहास ने हमको दासता की मनोवृति से बाहर नही निकलने दिया। हम उदार व सहिष्णु बनें रहें परंतु उसके साथ ही कायरता और संघर्ष हीनता आदि के अवगुणों से ग्रस्त होते गये। अयोध्या में श्री राम मंदिर का निर्माण हो या गौरक्षा का प्रश्न हो, विरोध करने वालो की संख्या अभी भी कम नही है। वरिष्ठ लेखक व राष्ट्रवादी विचारक स्व. भानुप्रताप शुक्ल के वर्षो पूर्व प्रकाशित हुए एक लेख के अनुसार देशवासियों का एक वर्ग दूसरे वर्ग पर, एक जमात दूसरी जमात पर, एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय के ऊपर आक्रमण करें, हिंसा, हत्या, लुट और आगजनी करें, बलात्कार और अपहरण करें या करने का प्रयास करें या करने लग जाये तो पीड़ित समाज क्या करें? अपना घर जलने जलाने दें, अपनी बहुबेटियों के साथ बलात्कार करने दें? उन्हें आमंत्रित करें कि आप हमारा घर फुकियें, हमारा घर लूटिये और हमारी ललनाओं को ले जाईये। अपनी खुशी के लिये आप जो चाहें करें हम कुछ नही कहेंगे। वास्तव में स्व. शुक्ल जी के मन में इन जिहादियों के विरुद्ध कितना आक्रोश व हिंदुओं की विवशता के लिये कितनी अधिक पीड़ा थी जो उन्होंने इतने अधिक स्पष्ट शब्दों से इस कटू सत्य को ह्रदय स्पर्शी बना दिया था। याद रखो जब देश और समाज में अनाचार व दुराचार के विरुद्ध क्रोध भर जाता है तो वहां किसी चाणक्य को कुशासन के विरुद्ध शिखा खोलनी पड़ती है, क्योंकि धर्म रक्षा व राष्ट्र रक्षा का प्रश्न सर्वोपरि होता है।

निसंदेह हमने अपने स्वर्ण युग और गौरान्वित करने वाले इतिहास को भुला दिया। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि इतिहास के उन प्रेरणादायी अध्यायों व ग्रंथो के ज्ञान का हमें सानिध्य भी न मिल सका। हम वसुधैव कुटुम्बकम को मानने वाले है तो शस्त्रमेव जयते के उदघोषक व शास्त्र एवं शस्त्र के पुजारी भी है। हम अश्वमेघ यज्ञ के लिए विजय रथ पर सवारी करने वाले महान योद्धाओं के वंशज होते हुए भी केवल सम्राट अशोक के कलिंग युद्ध के बाद उनके अहिंसात्मक प्रेम के प्रति आकर्षित हो गये, क्यों? हमने अपने धर्म के मूल ग्रंथों वेद, उपनिषद, रामायण व महाभारत आदि के ज्ञान व सिद्धान्तों को आत्मसात नही किया बल्कि तथाकथित धर्माचार्यों व कथावाचको से प्रभावित होकर उनके अनुसार धर्म के पालन को ही धर्म मान लिया। ऐसी विपरीत व्यवस्था ने भी हिंदुओं के आत्मस्वाभिमान को धूमिल ही किया। इसीलिए ऐसा प्रतीत होता है कि देश के नीतिनियन्ताओं ने हिंदुत्व की विराटता के मूल तत्वों का अध्ययन नही किया और तथाकथित बुद्धिजीवियों और धर्माचार्यो की भांति केवल उदारता, भीरुता व अहिंसावादी आदि बनें रहने का ही नकारात्मक पक्ष रखा है। जबकि अन्य धर्मावलंबियों ने हिंदुत्व के विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है तो भारत की गौरवशाली संस्कृति की रक्षार्थ प्रखर हिंदुत्व को रौद्र रुप धारण करने की निरंतर आवश्यकता बनी हुई है। हिंदुत्व के मूल तत्व और सिद्धान्त भी इसको उचित मानते है। हमारे तथाकथित बुद्धि जीवियों को भी हिन्दू अस्मिता को स्वीकारना होगा साथ ही रामायण व महाभारत आदि महाकाव्यों को कपोल–कल्पित (मिथ्या) कहने वालो को इनकी सत्यता को समझना होगा। इन दिग्भ्रमित बुद्धिजीवियों को आक्रांताओं के दमनकारी इतिहास के अतिरिक्त राष्ट्र के स्वर्णिम काल व प्रेरणादायी इतिहास के अध्यायों का अध्ययन भी करना होगा? प्रमुख समाजवादी नेता स्व. डॉ० राममनोहर लोहिया से एक बार प्रश्न किया गया था कि हिंदुस्तान क्यों इतनी बार गुलाम हुआ? इस पर उनका कहना था कि हम दूब घास की तरह झुक जाते है, बहुत दबते है, हर स्थिति में समझौता करके आत्मसमर्पण कर देते है। उन्होंने उपाय दिया कि आत्मसमर्पण की मनोवृति को खत्म करना सीखें और यह तभी होगा जब हिन्दू धर्म की तेजस्विता को हिन्दू प्रकट करने का प्रयास करेंगे। इसलिये यह कहना अनुचित नही कि सजग हिन्दू समाज ही राष्ट्र को सुरक्षित रख सकता है। उसके लिये हिंदुओं को कट्टरवादी व साम्प्रदायिक भी कहा जायेगा उनकी अनेक आलोचनाएं भी होगी। लेकिन यह कहना अशुद्ध नही की यही तेजस्वी, साम्प्रदायिक व आक्रोशित हिन्दू ही धर्म व देश की रक्षा कर पायेंगे? आज जब देशभक्ति व राष्ट्रवाद को साम्प्रदायिक कहकर नकारात्मक आलोचना सहनी पड़ती है। शत्रु देश पाकिस्तान व देशद्रोही जिहादियों पर जब आक्रमक होने के विचार का प्रसार होता है तब भी हिंदुओं को साम्प्रदायिक कहा जाता है। **समान नागरिक सहिंता** की चर्चा हो या फिर बंग्लादेशी, पाकिस्तानी और रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठियों को बाहर निकालने का जनाक्रोश हो हिंदुओं पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाना समान्यतः प्रगतिशील विचार बन जाता है। ऐसी विपरीत स्थिति में राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये अगर हिंदुओं को कट्टरवादी, साम्प्रदायिक और समयानुसार संविधान का पालन करते हुए हिंसक भी होना पड़ें तो इसमें अनुचित क्या है? महर्षि अरविन्द ने वर्षो पूर्व लिखा था कि हमने शक्ति को छोड़ दिया है, इसलिए शक्ति ने भी हमें छोड़ दिया। अतः हिंदुत्व के मूल तत्व को पहचानों और शान्ति के लिये शक्ति के उपासक बनो।

महोदय

नमस्कार! दिनांक २७ सितम्बर से ०३ अक्टूबर २०१७ तक की साप्ताहिक "हिन्दू सभा वार्ता" पत्रिका प्राप्त। धन्यवाद। 'सौ वर्ष तक कैसे पाएँ–आरोग्य। में बताया है–शरीर के विकास में फाइबर की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह हमें केवल शाकाहारी भोजन से ही प्राप्त होती है। मांसाहारी भोजन में इनकी मात्रा नगण्य होती है। "शक्ति की आराधना के विशिष्ट केन्द्र दिव्य शक्तिपीठ में अनेक शक्तिपीठों का विवरण दिया है। श्री राम जन्मभूमि अयोध्या के इतिहास की संघर्ष गाथा–भाग–। 'हिन्दू अस्तित्व संकट और समाधान' आदि पठनीय है। भक्ति–भाव, देश–प्रेम आदि विषयों से प्रकाशित "हिन्दू सभा वार्ता" पत्रिका के प्रेषित हेतु साधुवाद।

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति

क्या आणविक आयुधों व प्रक्षेपास्त्रों से लैस भारत-पाक के बीच चल रहा सांस्कृतिक वाक्‌युद्ध थमेगा? अथवा ज्वलनशील आत्मदाह को बढ़ावा दे सकता हैं? न्यूयार्क टाइम्‌स का मत

✍ हरिकृष्ण निगम

पाकिस्तान अपने राजनीतिक अस्तित्व में आने के बाद से और विशेष कर दोनों देश भारत और पाक नाभिकीय शीर्ष युक्त अणु प्रक्षेपास्त्रों से लैस हो चुके हैं व अपने सीमावर्ती संघर्ष व कश्मीर विवाद के बहाने युद्ध की विक्षीणिका व उसकी चिनगारियां कई बार झुलस चुके है और जैसा पिछले तीन पाक–भारत युद्धों में हुआ था एक सांस्कृतिक युद्ध की पहली की परिचित आहट की आज पुनरावृत्ति से फिर जूझ रहे हैं।

भारत–पाक के बीच चल रहे वैमनस्य ने हाल में एक सांस्कृतिक युद्ध का रूप ले लिया है और हाल में न्यूयार्क टाइमस के २० अक्टूबर २०१६ के अंक में एक विस्तृत पृष्ठभूमि विषयक आलेख प्रकाशित हुआ है जिसे मुम्बई से गीता आनन्द व आयेशा वेंकटरमन ने लिख भेजा है जिसमे इस्लामाबाद स्थित पत्रकार सलमान मसूद की पृष्ठभूमि सम्बन्धी एकांगी टिप्पणियों से लगता है दोनों देशों के बीच और विद्वेष बढ़ाने की चेष्टा की गई है।

न्यूयार्क टाइमस के हाल के विशेष आलेख के अनुसार इसमें संशय नहीं कि भारत–पाक के बीच यह तात्कालिक ज्वलनशील मुद्दा बन सकता है। पाकिस्तान ने उन सारे भारतीय टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रसारण पर प्रतिबंध लगा दिए हैं जब से भारतीय रेडियो टेलीविजन व प्रसारण से जुड़े कलाकारों व निर्माताओं के औद्योगिक संगठनों ने पाकिस्तानी गायकों, कलाकारों व रंगमंच कर्मियों को बहिष्कृत करने का निर्णय लिया है। जब से पाकिस्तान प्रायोजित देश सीमा पार भारतीय सैन्य बलों के आतंकवादी हमलों में नृशंस हत्यायें हुई और उनके विरुद्ध भारत सरकार ने शलचिक्सा जैसे प्रतिशोधात्मक हमले किया है दोनों देश ईंट का जवाब पत्थर से देने के लिए अभिशप्त से हो गए हैं जिनके प्रति अमेरिकी अंग्रेजी मीडिया चिन्त व्यक्त कर रहा है। नरेन्द्र मोदी की निर्णायात्मक बदले की आत्मस्वीकृति ने आग में घी डालने जैसी चले आ रहे तनावों की स्थिति में सबसे पहले मनोरंजन, फिल्म व संगीत कह 'पाप कल्चर' की दोनों देशों की आम जीवन–चर्चा पर चोट पहुंचाई है। जब से महाराष्ट्र नव निर्माण सेना के राजठाकरे ने खुल कर पाकिस्तानी टी. वी. रेडियो व फिल्म कलाकारों को तुरन्त देश छोड़ने की धमकी दी है और इसके विरोध में उतरे एन. डी. टी. वी. नामक चैनल व सेकुलर कहलाने वाले लेखक राजनीति बाजों व पत्रकारों के विरुद्ध हिंसक प्रदर्शन व आगजनी की घटनाओं को अंजाम दिया है, इस विस्फोटक स्थिति का लाभ पाकिस्तानी नेता व मीडिया उठाने की हर कोशिश में जुटा है। जब से बालीउड के चर्चित सितारे एवं फिल्म निर्माता करन जौहर ने देशभक्ति के नारों के साथ और कपिल शर्मा के लोकप्रिय शो में देशभक्ति और हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानियों की जय के नारो की तीव्र जयजयकार कई दिनों तक गूंजती रही पाकिस्तान के अनेक भारतीय मनोरंजन में लगे गायक रंगमंच कर्मी, सूफी गायक, निर्माता व कलाकार व उनके समर्थक जैसे आमिर खान, सलमान खान, शाहरुखां, महेश भट्ट, आलिया भट्ट, इरफान खान, शबाना आजमी, मुम्बई के दशकों पहले रह शोरिफ नाना चूड़ा सभा की मुस्लिम पत्नी मुनीरा की पुत्री शाइना एन. सी. वीरसंघवी, शेखर गुप्ता, वयोवृद्ध लेखक कुलदीप नैर आदि अकल्पनीय असमंजस व अप्रत्याशित विरोधों व निन्दात्मक टिप्पणियों से जूझ रहे हैं। चाहे अपनी समाचार पत्रों में मुस्लिम नाम की उपस्थित 'आकार अहमद पटेल' सिर्फ आकार पटेल लिखकर छिपाते हों या भारत के अल्पसंख्यक आयोग के कश्मीरी मुस्लिम अख्तर अंसारूल अमेरिका में अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों या मीडिया स्वयं उर्दू ने जानते हुए भी मुसलमानों के भाषाई जेनोसाइड पर विदेशी समुदाय जो उर्दू से अनभिज्ञ हों पर उनको अंग्रेजी में आवाज उठाने को प्रेरित करते है। एक समय दन्तकथा बने फिल्म जगत के महानायक दिलीप

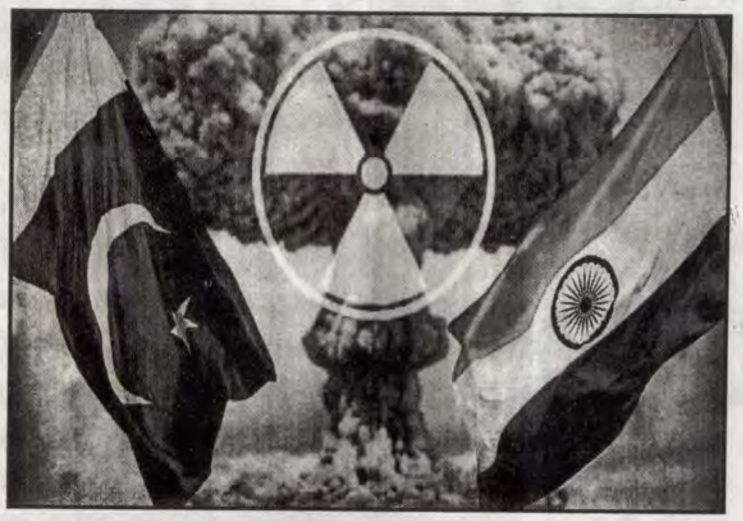

कुमार पाकिस्तान में युसूफ खान से जाने जाते थे और उनके सर्वोच्च राजकीय अलंकार निशाने पाकिस्तान के हकदार माने जाते थे और आज वे भी पाकिस्तानी मनोरंजन के भारत–स्थित आर्थिक लाभार्थियों के निकाले जाने के निर्णय पर व्यग्र व व्यथित है। जब लता मंगेशकर पर दशकों से लगाए गए पाकिस्तानी बहिष्कार की बात उठती है तब हमारे देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के किसी हिमायती को आज तक इसमें कुछ अनुचित नही दीख पड़ा था। यदि आज प्रसिद्ध उर्दू शायर जाँ निसार अख्तर की पत्नी से महेश भट्ट ने अघोषित व गुप्त वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया उससे उत्पन्न संतान जो आज प्रसिद्ध सिने कलाकार इमरान हाशमी परदे पर लम्बे चुम्बनों के लिए विख्यात है, भारतीय फिल्म उद्योग के संगठनों की आलोचना करते हैं तब वह भी विश्व स्तर का समाचार बन जाता है। पाकिस्तानी मीडिया में उनके वक्तव्यों को भी उद्घृत किया गया है। ओमपुरी और अर्णव गोखर व महेश भट्ट ऐसे अतिरिक्त नाम हैं जिन्होंने अवांछनीय पाकिस्तानी तत्वों के विवाद को भारत में लगातार आगे बढ़ाया। संगीत, साहित्य, रंगमंच व क्रिकेट की पुरानी सभी यादें जो पहले दोनों देशों के बीच घृणा के बावजूद, समय समय पर जोड़ने व नजदीकी लाने का उपकरण बनाती थी, न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार आज कमजोर हो चुकी है। जो भयावह सकते हैं। आज का चल रहा सांस्कृतिक स्टैण्ड ऑफ २८ सितम्बर २०१६ को शुरू हुआ जन इण्डिया मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन (इम्पा) सर्वसम्मति से इस पक्ष में घोषणा की पाकिस्तानी कलाकारों को रखने के लिए या काम देने को तुरन्त बन्द किया जाए। इम्पा के महासचिव मनोज चतुर्वेदी ने इस निर्णय को स्थिति के अनुरूप वांछनीय कहा। महाराष्ट्र नव निर्माण सेना जो 'फारराइट' अतिरेकी दक्षिणपंथी क्षेत्रीय राजनीतिक दल है, उसके अध्यक्ष राज ठाकरे मानते हैं कि मनोरंजन की दुनिया में पाकिस्तान समर्थक तत्व अपनी घुसपैठ कर चुके हैं इसलिए उनका विरोध तुरन्त आवश्यक है क्योंकि सीमा पर युद्ध जैसी स्थिति पाकिस्तानी प्रशासन व सेना बनाने में जुटा है। भारतीय टेलीविजन चैनल "जिन्दगी" जिसे शाहरूख खान द्वारा संरक्षित ओ० के० एण्ड ए. टी. व सोनी आदि सन् २००४ से ही पाकिस्तानी सीरियल या स्टेज प्ले को लोकप्रिय श्रृंखलाएं निरन्तर प्रसारित करती रही है बन्द की जा सकती है। वस्तुतः सिनेमा–ओनर्स एण्ड एनजीसिटर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया भारत में पाकिस्तानी निर्माताओं व कलाकारों की सबसे बड़ी कड़ी रही है इसके कर्ताधता करन जौहर की अपनी नई फिल्म "ऐ–दिल हैं मुश्किल खतरे में पड़ गई है। फिल्मों के अलावा दूसरी अनकही कड़ी जो दो देशों को बांधती है वह दो देशों के बीच पान की तस्करी, दो देशों के बीच तम्बाकू, गुटके, मादक द्रव्य को कुछ परिचित ब्रैण्डों का अवैध व्यापार भी है जिसका मूल्य कई विलियन डालर तक का कहा जाता है। अपने अपने संकीर्ण कारणों से दोनों देशों का मीडिया घृणा की बढ़ती हवा के विरुद्ध अपने अपने देश में कुछ राजनीतिक दलों व बुद्धिजीवियों की निन्दा करने में लग चुका है।

सारांश यह है कि भारत पाक तनाव विषयक तथ्यों से सम्बन्धित २० अक्टूबर २०१६ के न्यूयार्क टाइम्स के उपर्युक्त पृष्ठभूमि आलेख में भारत व उसके कथित भगवा हिन्दू अतिरेकियों की भर्त्सना करने की कोशिश की गई है जैसा पिछले तीन भारत पाक युद्धों के ठीक पहले हर बार होता आया है।

२४ अक्टूबर २०१६ को पुनः न्यूयार्क टाइम्स में गीता आनन्द को नई दिल्ली से भेजी टफ स्टैण्ड आन मिलिटोन्टस रोजोज, रिस्कस विद पाकिस्तान शीर्षक तीन हजार शब्दों की रिपोर्ट में ७ अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पुतले का कराची में प्रदर्शनकारियों को जलते दिखाया गया और चित्र के शीर्षक में यह भी लिखा गया है कि भारत द्वारा ऐसा वातावरण बनाया जा रहा है जिसे कभी भी युद्ध भड़क सकता है। नरेन्द्र मोदी जब विरोधी दल में थे अत्यन्त कमजोर नेता थे और तत्कालीन भारत सरकार के अत्यन्त मुखर अलोचक थे, अब सीमा पर हुए छिटपुट संघर्ष के बाद अत्यन्त आक्रामक दिखाई देते है। अब अपने कडे रुख का पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध घृणा की नई लहर फैला रहे है।

इतिहास स्वयं को दोहराता है

✍ प्रो० ए०पी० सारस्वत

(पिछले अंक का शेष)

तीन महीने की गैर-इस्लामी छूट : (मार्च से जून १४६४ ईस्वी, 'ग्रेनाडा' स्पेन में)

इतिहास स्वयं को दोहराता है परन्तु कभी–कभी उल्टे क्रम में। 'ग्रेनाडा' में काबा का इतिहास ८३६ वर्ष पश्चात स्वयं को दुहराता है

परन्तु विपरीत उल्टे क्रम में। पुनः मुसलमान इसके एक पक्ष थे परन्तु दुर्भाग्य भुगतने वाले, कि ३ महीने के भीतर या तो वे इस्लाम त्याग कर ईसाई धर्म स्वीकार कर लें या स्पेन छोड़कर चले जाएँ अन्यथा ईसाई धार्मिक अदालतों (The Inquisition) द्वारा दिया गया मृत्युदंड स्वीकार करें। स्पेनी मुसलमान 'मूर', यदि उसका जवाब कैथोलिक अदालत में आसीन उच्च धर्माचारियों को पसन्द नहीं आता था, उस अभागे मूर के लिए यह गर्दन से लटका दिये जाने के लिए पर्याप्त था। अभागे मूरों से यही सुनने की उम्मीद की जाती थी कि वह यही कहेंगे कि–वे धर्मपरायण कैथोलिक क्रिश्चियन हैं और इस बात का उन्हें कुछ पुख्ता प्रमाण भी देना होता था–क्रिश्चियन प्रार्थनाओं को तुरन्त सुनाना, बाइबिल एवं क्रिश्चियन धर्म की प्रारम्भिक जानकारी, रोजाना चर्च जाना, सब इस्लामिक धर्मग्रन्थों को जला देना जो उसके पास हैं और सब मस्जिदों को तोड़कर चर्चों में बदल देना एवं इस्लामी धर्म के किसी भी चिन्ह को स्पेन से नष्ट कर देना। ठीक वैसा ही जैसा किसी विजयी इस्लामी सेना द्वारा किसी भी गैर–मुस्लिम देश को जीतते समय किया जाता था।

स्पेन की दृढ़ विश्वासी रानी 'ईसावेला' ने, जब वह १५ वर्ष की छोटी लड़की थी, कसम खाई थी कि वह अपने देश को मुसलमानों से मुक्त कराएगी और पुनः क्रिश्चियन धर्म को स्थापित करेगी। अब ७०० वर्ष हो गये थे जब स्पेन पर बगदादी मुसलमानों का अधिकार हो गया था और फिर ७११ ईस्वी में उत्तरी अफ्रीका के मोरक्को से आए मुसलमानों ने अधिकार कर लिया। स्पेन कमोबेश एक मुस्लिम बहुल देश बन गया था। **इस्लामीकरण की प्रक्रिया थी–''उत्पीड़न, बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन, विवाह योग्य स्त्री एवं लड़कियों का अपहरण, बलपूर्वक विवाह, धार्मिक असहिष्णुता एवं जजिया कर, चर्चों को नष्ट करना, उनका मस्जिद बनाना और बड़े पैमाने पर हत्याएँ''।** जब इस्लामी हुकूमत पूर्ण रूप से स्थापित हो गई तो ७५४ ईस्वी में अब्दुल रहमान ने, जो एक निष्कासित अब्बासी राजकुमार था, स्पेन के मध्य 'कारदोवा' में इस्लामी खिलाफत स्थापित की। एक विश्व प्रसिद्ध मस्जिद, जो नमूने और बनावट में अद्वितीय थी, कारदोवा में बनाई गई। स्पेन तब तक एक तरह से पूर्णरूपेण इस्लामी अधिकार में ही रहा जब तक स्पेन के लिओन एवं कैसिल को राजा फरडीनेन्ड ने कारदोवा के खलीफा अबू अली से छीन नहीं लिया।

स्पेन के ४८१ वर्ष (७५५ ई. से १२३६ ई.) के इस्लामी राज्य में ३४ खलीफा हुए जिन्होंने कारदोवा से राज्य किया, जिनमें अबू अली आखिरी था। कारदोवा से मुसलमानों को दक्षिण की ओर भगाया गया जहाँ १२३६ में उन्होंने ग्रेनाडा में खलीफा गद्दी स्थापित की। स्पेन का दक्षिण और पश्चिमी हिस्सा अभी भी मुसलमानों के अधिकार में था और मुहम्मद प्रथम १२३८ ई. में ग्रेनाडा में खलीफा बना। इस तरह २५६ वर्ष में १४६२ ई. तक ५७ खलीफा ग्रेनाडा की गद्दी से दक्षिण–पश्चिम स्पेन पर शासन करते रहे, इनमें अन्तिम अब्दुल्ला जग्गाल था।६

स्पेन से मुसलमानों को बाहर निकालने और पुनः ईसाई राज्य स्थापित करने की प्रबल इच्छा ईसावेला के दिल में उस समय से ही बराबर जल रही थी, जबसे उसकी शादी स्पेन के राजा फरडीनेन्ड से हुई थी। फरडीनेन्ड को ईसावेला एक राष्ट्रप्रेमी के रूप में मिली और वह भी उसके साथ इसी उद्देश्य से जुड़ गया। परन्तु यह एक कठिन काम था, इस समय स्पेन का सिर्फ एक छोटा भाग ही ईसाइयों के अधिकार में था जबकि स्पेन का अधिकांश भाग इस्लामी खलीफा के अधिकार में था। इस्लाम के नाम पर ग्रेनाडा का खलीफा तुर्की के बलशाली खलीफा वैजयद–२ से सहायता प्राप्त करता था तथा मिश्र और मोरक्को के इस्लामी सुल्तानों से भी सहायता प्राप्त था। रानी ईसावेला और राजा फरडीनेन्ड ने दृढ़ निश्चय के साथ ग्रेनाडा के खलीफा से युद्ध प्रारम्भ किया। १० साल के युद्ध में ग्रेनाडा को छोड़कर शेष स्पेन को आजाद करा लिया गया। १४६२ ई. में ग्रेनाडा को भी स्वतंत्र करा लिया गया। उसी साल ईसावेला ने स्पेन में इस्लामिक राज्य की समाप्ति तथा ईसाई धर्म एवं राज्य की स्थापना की घोषणा की। उसने कारदोवा की दीवार पर एक ईसाई निशान बनाया जो उसकी घोषणा का सूचक था।

यह सदा विवेचना करने वाले इतिहासकारों एवं विद्वानों का विषय बना रहेगा कि किस तरह इस्लामिक इतिहास ने स्वयं को स्पेन में दोहराया–आगे बढ़ने के या पीछे हटने के क्रम में और यह भाग्य था या एक घटना–चक्र!

ग्रेनाडा के इस्लामी दुर्ग के गिरने के २ वर्ष पश्चात् स्पेन की भूमि पर ईसावेला ने मार्च की उसी तारीख और उसी दिन वही खौफनाक आदेश जारी किया जिसे मुहम्मद ने उसी दिन मार्च ६३१ ई. को काबा मन्दिर में जारी किया था। इस आदेश के जारी करने के ढंग और भाव भी वही थे। इतिहास ने स्वयं को दोहराया, परन्तु इस बार विचित्र पृष्ठभूमि में। इस बार आदेश 'मुहम्मद' काफिरों, किताबियों एवं नास्तिकों के लिए नहीं दे रहे थे, इसके विपरीत आदेश काफिरों द्वारा मुसलमानों को दिये जा रहे थे। इस समय मुसलमान इन आदेशों का पालन करने वाले थे। मुहम्मद ने मार्च ६३१ ई. में काबा में जो आदेश दिया था उसके केवल २ शब्द बदलकर, काफिर के स्थान पर मुसलमान और स्पेन के स्थान पर अरेबिया, इस बार ईसावेला ने आदेश जारी किया–

तीन माह की समाप्ति के बाद (जून १४६४ के पश्चात) कोई भी मुसलमान स्पेन की पवित्र भूमि पर नहीं रहेगा, या तो उसे ईसाई धर्म ग्रहण करना होगा या देश छोड़कर जाना होगा।

ईसावेला अत्याचारी नहीं थी, उसने कभी आज्ञा नहीं दी–''तुम्हें अधिकार है... जिसे भी तुम्हारा सीधा हाथ पकड़ ले।'' उसने स्पेनी सिपाहियों को मुस्लिम स्त्री एवं लड़कियों को उठा लेने की आज्ञा कभी नहीं दी और न उन्हें गुलाम के रूप में बेच देने की या सिपाहियों में बाँट लेने की, जैसा कि मुसलमानों ने किया था। फिर भी वह (ईसावेला) सब मुसलमानों को स्पेन से निकाल देने के अपने आदेश पर दृढ़ रही। स्पेन की सारी मस्जिदें और दूसरे इस्लामी भवन जो उस समय गुलामी का प्रतीक समझे जाते थे, गिरा दिये गये। राष्ट्रीय पहचान की पुनर्स्थापना जो करनी थी।

दुनियाभर में प्रसिद्ध 'कारदोवा की मस्जिद' को एक चर्च बना दिया गया और यही हाल दूसरी मस्जिदों का हुआ।११ इस्लाम की प्रत्येक धर्म पुस्तक की तलाश की गई, उन्हें या तो समुद्र में फेंक दिया गया या जला दिया गया। जो मुसलमान स्पेन छोड़ना चाहते थे उन्हें मोरक्को भेज दिया गया और जो बचे उन्हें ईसाई बना लिया गया। यह सब ३ माह के भीतर ही किया गया, ठीक उसी ढंग से जिस ढंग से कभी मुहम्मद ने अरेबिया में काबा मन्दिर में किया था। आह! कभी मुहम्मद ने सोचा होता कि इतिहास स्वयं को दोहराता है।

परन्तु इस समय एक डर भी छा रहा था–पड़ोसी मुस्लिम देश स्पेन को पुनः विजित शेष पृष्ठ 11 पर

गांधी जी हिन्दुओं के लिए पूजनीय कैसे?

कृष्ण चन्द्र गर्ग

बेहद आश्चर्य और खेद का विषय है कि मोहनदास कर्मचन्द गांधी (महात्मा गांधी) हिन्दुओं के लिए पूजनीय बने हुए हैं। उन्हें तो मुसलमानों के लिए पूजनीय होना चाहिए था। वे तो मुसलमानों को खुश करने के लिए हमेशा हिन्दू हितों को कुर्बान करते रहे हैं। वे सारी उमर हिन्दुओं को मुसलमानों के हाथों पिटवाते और मरवाते रहे हैं तथा हिन्दुओं को कायर और कमजोर बनाते रहे हैं। इसी विषय की पुष्टि में यहां कुछ घटनाएं दी जा रही हैं।

१. ६ अप्रैल १६४७ को दिल्ली में प्रार्थना सभा में गांधी जी का भाषण – बेशक मुसलमान हिन्दुओं को समाप्त करना चाहें तो भी हिन्दुओं को मुसलमानों के प्रति अपने दिलों में कोई गुस्सा नहीं रखना चाहिए। अगर मुसलमान हम सभी को मार देना चाहें हमें बहादुरी से मौत का सामना करना चाहिए। अगर हिन्दुओं को मार कर वे अपना राज्य स्थापित करना चाहें हम अपनी जिन्दगियां कुर्बान करके नई दुनिया में एक रास्ता दिखाएंगे।

२. २४ जुलाई १६४७ को दिल्ली में प्रार्थना सभा में गांधी जी का भाषण - बेशक मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन का दो बार अध्यक्ष रह चुका हूँ, मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि देवनागरी लिपि में हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा कभी नहीं बन सकती।

३. जो लोग अपनी जान बचाकर पाकिस्तान से भारत आए थे उन्होंने गांधी जी से सवाल किया था। उसके उत्तर में २३ सितम्बर १६४७ को दिल्ली में प्रार्थना सभा में गांधी जी ने कहा था – उन्होंने मेरे से पूछा कि जो हिन्दू पाकिस्तान में हैं उनके लिए हमें क्या करना चाहिए। बल्कि उलटा मैंने उनसे पूछा वहां पर मर जाने की बजाए वे भारत में क्यों आए। मेरा यह पक्का विश्वास है कि अत्याचार होते हुए भी हम जहां पर हैं वहीं पर रहें और मर जाएं। अगर लोग हमें मारने आते हैं, तो हम मर जाएं, पर ईश्वर का नाम लेते हुए हौसले से मरें।

४. जब अक्तूबर १६४७ में पाकिस्तानी सेना की सहायता से कबायलियों ने कश्मीर पर हमला कर दिया था उस समय की स्थिति पर ३१ अक्तूबर १६४७ को दिल्ली में प्रार्थना सभा में गांधी जी का भाषण – कश्मीरी लोग आक्रमणकारियों को बता दें कि वे अपने घरों को वापिस जाएं। अगर वे हमला करते हैं तो उन्हें कश्मीरियों के शवों पर चलना होगा। वे श्रीनगर को इतना आसानी से नहीं जीत सकते। तब वहां पर हमारे सैनिकों को कोई कुछ न कहेगा। अगर हमारे सैनिक मर जाते हैं, वे अमर हो जाएंगे। तब हम खुशी से नाच सकते हैं और गा सकते हैं।

५. हिन्दुओं का अहित न चाहने वाले हिन्दू नेताओं के प्रति २६ मई १६२४ के 'यंग इंडिया' पत्रिका में गांधी जी ने अपने विचार लिखे - मुझे पण्डित मदनमोहन मालवीय जी से सावधान किया गया है। सन्देह है कि उनके कोई गुप्त इरादे हैं। कहा जाता है कि वे मुसलमानों के मित्र नहीं हैं। दूसरा व्यक्ति जिस पर विश्वास नहीं किया जा सकता वह है लाला लाजपत राय। स्वामी श्रद्धानंद पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता।

६. २६ मई १६२४ की 'यंग इंडिया' पत्रिका में गांधी जी लिखते हैं - मैंने आर्य समाज की बाईबल 'सत्यार्थ प्रकाश' को पढ़ा है। इतने बड़े सुधारक (महर्षि दयानन्द) द्वारा लिखी इससे अधिक निराशाजनक पुस्तक मैंने नहीं पढ़ी।

नोट : गांधी जी सत्यार्थप्रकाश को निराशाजनक पुस्तक बताते हैं। जबकि वीर सावरकर ने सत्यार्थप्रकाश के बारे में कहा है "हिन्दुओं की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की मौजूदगी में कोई भी विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।"

सत्यार्थप्रकाश ने हिन्दुओं में आत्म गौरव की भावना को जागृत किया है। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ही रामप्रसाद बिस्मिल जैसे हजारों नौजवान स्वतन्त्रा संग्राम में कूदे। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ही आर्यसमाज ने स्त्री शिक्षा, अछूतोद्वार, जातपात मुक्त समाज, विधवा विवाह आदि समाज सुधार के बहुत से काम किए, बाल विवाह, सतीप्रथा, पाखण्ड, अन्धविश्वास को समाप्त करने का प्रयास किया। देश का सरकार के बाद सबसे बड़ा शिक्षा संस्थान दयानन्द ऐंग्लो वैदिक (D.A.V.) सत्यार्थप्रकाश की ही देन है।

७. मोपला हत्याकाण्ड - केरल प्रान्त में मालाबार जिले में मोपला मुसलमान बहुसंख्यक थे। मुसलमानों ने अंग्रेजों के विरुद्ध खिलाफत आन्दोलन चला रखा था। मुसलमानों ने अल्पसंख्यक हिन्दुओं से कहा कि वे भी अंग्रेजों के खिलाफ खुलमखुला विद्रोह करें। हिन्दू तैयार न हुए। तब मोपलें ने कहा – अंग्रेजों से बाद में सुलटेंगे पहले तुम्हें सीधा कर दें। अगस्त १६२१ में वहां पर बर्बर मोपलों ने हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा, महिलाओं का अपहरण किया, सामूहिक बलात्कार किए, हिन्दू परिवारों को जिन्दा जलाया, हजारों को बलपूर्वक मुसलमान बनाया। सैंकड़ों हिन्दू नारियों ने बर्बर मोपलों के बलात्कार से बचने के लिए कुओं में कूद कर प्राण दिए।

गांधी जी और उनके चेलों ने इस काण्ड को जनता से छिपाने की बहुत कोशिशें की, परन्तु ये घटनाएं जग जाहिर हो गई। बर्बर मोपलों की निन्दा करने की बजाए गांधी जी ने उन्हें खुदा के बहादुर बन्दे कहा क्योंकि वे अपने मजहब के लिए अत्याचार कर रहे थे। परन्तु आर्य समाज ने जबरदस्ती मुसलमान बनाए गए हिन्दुओं को वापिस हिन्दू बनाया और अंग्रेज सरकार ने गुण्डों को यथोचित दण्ड दिया। गांधी जी हिन्दुओं पर होते अत्याचारों को छुपाते रहे और मुसलमानों को उत्तेजित कर हिन्दुओं की हत्याएं करवाते रहे।

८. स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान - उत्तर प्रदेश के आगरा क्षेत्र में ऐसे लाखों राजपूत रहते थे जिन्हें औरंगजेब के अत्याचारी शासन काल में जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया था। ये मलकाने राजपूत कहलाते थे। ये कहने को तो मुसलमान थे, परन्तु इनका रहन–सहन, रीति–रिवाज सब हिन्दुओं के ही थे। जरा से प्रोत्साहन से वे सब हिन्दू बनने को तैयार हो गए। यह सन १६२१–१६२२ की बात है। स्वामी श्रद्धानन्द जी की अगुवाई में आर्य समाज ने उनकी शुद्धि का काम शुरु कर दिया। कांग्रेसी मुसलमानों ने ऐतराज किया। तो गांधी जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी को शुद्धि के कार्य से अलग होने को कहा। स्वामी जी आर्य समाज के बड़े नेता थे, साथ ही कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य थे। स्वामी जी ने कांग्रेस कार्यकारिणी से सम्बन्ध तोड़ लिया। शुद्धि का काम तेजी से चला और साठ हजार के लगभग मलकाने आर्य बन गए। गांधी जी ने शुद्धि आन्दोलन की भर्त्सना की। आर्य नेताओं को मुसलमानों की ओर से धमकियां आने लगीं। २३ दिसम्बर १६२६ को अब्दुल रशीद नाम के एक मुसलमान ने स्वामी जी को गोलियों से मार दिया। अंग्रेज सरकार ने खूनी को १४ नवम्बर १६२७ को फांसी दे दी। पर गांधी जी ने हत्यारे को अपना भाई कहा और उसे निर्दोष बताया। **२६ दिसम्बर १६२६ को गुवाहाटी में कांग्रेस की मीटिंग में गांधी जी ने कहा** - स्वामी श्रद्धानंद जी को मारने वाले अब्दुल रशीद को मैंने भाई कहा। मैं उसको स्वामी जी के कत्ल का दोषी भी नहीं मानता। ३० दिसम्बर १६२६ के 'यंग इंडिया' पत्र में गांधी जी ने लिखा कि मैं अब्दुल रशीद की वकालत करना चाहता हूँ।

६. महाशय राजपाल का कत्ल - मुसलमानों की ओर से दो पुस्तकें 'कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी' और 'उन्नीसवीं सदी का महर्षि' प्रकाशित हुई। पहली पुस्तक में योगेश्वर श्री कृष्ण पर भद्दे एवं अश्लील आरोप किए गए थे और दूसरी में महर्षि दयानंद पर। इन पुस्तकों के प्रत्युत्तर में महाशय राजपाल ने एक छोटी सी पुस्तक 'रंगीला रसूल' उर्दू में प्रकाशित की जिसमें मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में दी गई थी। परन्तु घटनाएं सभी इतिहास–सम्मत और प्रामाणिक थीं। महाशय राजपाल लाहौर में बड़े पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता थे।

'रंगीला रसूल' पुस्तक का प्रकाशन सन १६२३ में हुआ था। एक वर्ष तक सारे पंजाब में पुस्तक बिकती रही। इस पर किसी ने आपत्ति नहीं की। फिर किसी ने इस पुस्तक की एक प्रति गांधी जी को पहुँचा दी। गांधी जी ने अपने अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र 'यंग इंडिया' में २४ मई १६२४ के अंक में इस पर एक उत्तेजक टिप्पणी लिखी जिसका शीर्षक था 'आग भड़काने वाली पुस्तक' और उसमें मुसलमानों को उकसाने वाले ये शब्द भी लिखे "स्थानीय नेताओं को चाहिए कि वे इसका प्रकाशन बन्द कराने या इसे निन्दित ठहराने का उपाय खोज निकालें।" इसके बाद भी गांधी जी ने 'यंग इंडिया' पत्र के अन्य कई अंकों में 'रंगीला रसूल' पुस्तक के विरुद्ध भड़काने वाली टिप्पणियां लिखीं। परिणाम स्वरूप मुसलमानों ने महाशय राजपाल पर आक्रमण करने शुरु कर दिए। अन्त में ६ अप्रैल १६२६ को इलमदीन नाम के मुसलमान ने छुरा घोंपकर उन्हें कत्ल कर दिया।

सारे देश में महाशय राजपाल 'धर्मवीर और हुतात्मा' के रूप में कीर्तिमान होने लगे। उनके बलिदान से हिन्दू समाज में एक नई जागृति की लहर दौड़ पड़ी। परन्तु गांधी जी इस कीर्ति को सह न सके। **गांधी जी ने १८ अप्रैल १६२६ के 'यंग इंडिया' में लिखा - 'राजपाल की हत्या ने उसे शहीद बना दिया है और उन्हें वह कीर्ति प्राप्त हो गई जिसके वे योग्य नहीं थे।'**

मुहम्मद अली जिन्ना ने वकील के तौर पर तथा मुहम्मद इकबाल आदि बड़े मुसलमान नेताओं ने इलमदीन को निर्दोष साबित करने की पूरी कोशिश की। परन्तु अंग्रेज सरकार ने उसे दोषी मानकर ३१ अक्तूबर १६२६ को फांसी दे दी। मुसलमानों ने इलमदीन को सम्मानित कर उसे 'गाजी' की पदवी दी। पाकिस्तान बनने के बाद 'गाजी इलमदीन' नाम से फिल्म बनाई शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री राजनाथ सिंह जी,
माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार
नॉर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली-११०००१

विषय : हिन्दुस्थान में बुर्के पर प्रतिबंध, सामाजिक एकता और देशवासियों के अधिकार और स्वतंत्रता की सुरक्षा की गारंटी के लिए आवश्यक।

महोदय,

मीडिया के माध्यम से जानकारी मिली है कि मानवाधिकारों से संबंधित यूरोपीय यूनियन के न्यायालय ने बेल्जियम में बुर्के पर लगे प्रतिबंध को इस आधार पर मान्य कर दिया है कि इस प्रतिबंध से सामाजिक एकता, अन्य लोगों के अधिकार और आजादी की सुरक्षा की गारंटी सुनिश्चित होती है। लोकतांत्रिक समाज में इस प्रतिबंध को आवश्यक समझा गया है। चूँकि बुर्का कोई मजहबी आधार नहीं रखता और इससे स्त्रियों के मानव अधिकारों का हनन होता है, साथ–साथ उन्हें संदेह के घेरे में रखता है, इसलिए यह एक क्रूर प्रथा है, जिसका तत्काल हटाया जाना आवश्यक है। इसलिए बेल्जियम और अन्य यूरोपीय देशों की तर्ज पर अविलंब बुर्के पर प्रतिबंध लगा दिया जाए। शीघ्र निर्णय लेने की कृपा करें। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

श्रीराम जन्मस्थान पर मंदिर बनाने का विरोध करने वालों की नागरिकता समाप्त हो-हिन्दू महासभा

अयोध्या स्थित श्रीराम जन्मस्थान मुकदमे के प्रमुख पक्षकार अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव श्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी ने शिया बक्फ बोर्ड द्वारा उच्चतम न्यायालय में हलफनामा प्रस्तुत कर श्रीरामजन्मस्थान को हिन्दुओं को सौंपने की अपील का स्वागत किया है। उन्होंने कहा है कि भगवान श्रीराम हिन्दुस्तान के लोगों के लिये मर्यादा पुरूषोत्तम हैं। भगवान राम देश की पहचान हैं। उनसे हमारे देश का गौरव बढ़ता है। इसलिये ऐसे मर्यादा पुरूषोत्तम के जन्मस्थान पर भव्य मंदिर अतिशीघ्र बनना चाहिए। उन्होंने ११ अगस्त से मुकदमे की सुनवाई करने व उसके लिये पीठ गठित करने के उच्चतम न्यायालय के फैसले का स्वागत किया है तथा कहा है कि निर्णय भी हिन्दुओं के पक्ष में ही आयेगा। उन्होंने कहा कि शिया बक्फ बोर्ड का निर्णय सत्य की जीत है। भगवान राम के जन्मस्थान पर यदि मंदिर नहीं बनेगा तो क्या मंदिर पाकिस्तान में बनेगा। उन्होंने बताया कि हिन्दू महासभा ने मुकदमे में जोरदार पक्ष रखने की तैयारी कर ली है। उन्होंने कहा कि जब आर्केलाजिकल सर्वे आफ इंडिया द्वारा की गई खुदाई से स्पष्ट प्रमाण मिल गया है कि तोड़े गये ढांचे के नीचे मंदिर थी, तो अब श्रीराम मंदिर बनाने में विलम्ब क्यों हो रहा है। अखिल भारत हिन्दू महासभा नेताओं ने केन्द्र की राजग सरकार से अयोध्या स्थित भगवान राम के जन्मस्थान पर मंदिर बनाने का विरोध करने वालों की नागरिकता समाप्त करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम के मंदिर का विरोध करने वालों को हिन्दुस्तान में रहने का नैतिक अधिकार नहीं है। उनका देश निकाला किया जाये।

शेष पृष्ठ 12 का
संस्कृत के पक्षधर थे.........

से अध्ययन किया। उन्होंने स्वयं को वैदिक साहित्य तक सीमित नहीं रखा, बल्कि जेद–अवस्ता (पारसियों का धर्मग्रंथ) का भी अध्ययन किया। डॉ. अम्बेडकर कहते हैं कि जेद–अवस्था से मिले साक्ष्य बताते हैं कि शब्द वर्ण का संबंध एक खास प्रथा को मानने वाले लोगों के वर्ग से था। इसका रंग–रूप से कोई लेना–देना नहीं था। पश्चिमी सिद्धांत की मुख्य बातों का सार कुछ इस प्रकार है–वेद आर्य जैसे किसी नस्ल के बारे में नहीं जानते। वेद में ऐसे कोई साक्ष्य नहीं हैं कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया और यहाँ के मूल निवासी माने जाने वाले लोगों के बीच नस्ली भेद के संबंध में कोई साक्ष्य नहीं है। वेद इस बात से सहमत नहीं हैं कि आर्य रंग–रूप में अन्य लोगों से भिन्न हैं। अंबेडकर आगे कहते हैं, 'एंथ्रोपोलॉजी अगर वह विज्ञान है जो एक व्यक्ति की नस्ल को बताता है तो हिन्दू समाज के विभिन्न तबकों का एंथ्रोपोलॉजी के जरिए अध्ययन करने पर यह बात गलत साबित हुई है कि कथित अस्पृश्य लोग आर्यों व द्रविड़ से अलग हैं। यह बताता है कि ब्राह्मण और कथित अस्पृश्य एक ही नस्ल से संबंधित हैं। एंथ्रोपोलॉजी के अनुसार ब्राह्मण आर्य थे तो अस्पृश्य भी आर्य हैं। यदि ब्राह्मण द्रविड़ हैं तो अस्पृश्य भी द्रविड़ हैं। यदि ब्राह्मण नागा हैं तो कथित अस्पृश्य भी नागा हैं। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार छुआछूत का नस्ली सिद्धांत न सिर्फ एंथ्रोपोलॉजी के परिणाम को नकारता है बल्कि उसे भारत की संस्कृति, लोगों की नस्ल आदि के बारे में जो तथ्य प्रचलित हैं उनमें भी बहुत समर्थन नहीं मिलता। डॉ. अंबेडकर के निष्कर्ष अकाट्य हैं, किन्तु दुर्भाग्य से इनकी सबसे ज्यादा अनदेखी उन्हीं लोगों ने की जो उनके विचारों पर चलने का सबसे ज्यादा जोर–शोर से दावा करते हैं। बाबा साहेब द्वारा हिन्दू समाज के सुधार के प्रयासों को नकारें नहीं। उन्होंने संस्कृत को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिए जाने का समर्थन किया था। जाति व्यवस्था के विरोध का साहस दिखाया था। हिन्दू समाज में अन्य गलत प्रथाओं का विरोध किया था। उनके विचार में ये प्रथाएँ भारत के सच्चे अर्थों में मजबूत लोकतंत्र बनने की राह में बाधक हैं। इस पृष्ठभूमि में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अंबेडकर के विचारों को संपूर्णता में युवा पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास सराहनीय है। मेरी राय में उच्च शिक्षण संस्थाओं को भी इसके लिए आगे आना चाहिए।

शेष पृष्ठ 1 का
पटाखों से प्रदूषण और अब हनुमान....

कहा विचार कीजिए कि क्या प्रतिमा को हवाई मार्ग से हटाया जा सकता है। एलजी से बात कीजिए आपको पता है अमेरिका में सभी गगनचुंबी वस्तुओं को स्थानांतरित किया गया है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि हिन्दू महासभा हनुमानजी की मूर्ति को हटाने नहीं देगी। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि अन्य संप्रदाय के धार्मिक स्थलों को पहले हटाया जाये उसके बाद हनुमानजी की मूर्ति को हटाने की बात की जायें।

हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है

क्योंकि हिन्दू और केवल हिन्दू ही इस देश को भारत माता मानते हैं जबकि अन्य धर्मावलम्ब तो इसे माता कहने मात्र से भी चिढ़ते हैं। अतएव इस देश की एकता व अखण्डता की रक्षा केवल हिन्दुत्व की भावना ही कर सकती है।

ध्यान रखिये :-

- किसी भी इस्लामी राष्ट्र में हिन्दुओं को वैसी धार्मिक स्वतन्त्रता उपलब्ध नहीं हैं जो यहाँ सभी धर्मावलम्बियों को है।
- इस धरती पर भारत ही एकमात्र राष्ट्र है जहाँ हिन्दू बहुसंख्यक है।
- यदि यहाँ भी हिन्दू अल्पसंख्यक हो गये तो सम्पूर्ण विश्व से हिन्दू धर्म ही पूर्णतः समाप्त हो जाएगा।
- धर्मान्तरण से ही राष्ट्रान्तरण होता है।
- तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादियों ने (किन्तु वस्तुतः मुस्लिम व ईसाई तुष्टिकरणवादियों पूर्व में भी भारत माता का अंग–भंग करवाया था तथा भविष्य में भी वे अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु भारत के और अंग–भंग करवाने में नहीं हिचकिचायेंगे।
- सम्पूर्ण देश में हिन्दू महासभा ही एक मात्र ऐसा राजनैतिक दल है जो हिन्दू हितों की हित के प्रति मनसा–वाचा–कर्मणा जागरूक तत्पर और सन्नद्ध है।
- शेष सभी दल वचन से धर्मनिपेक्षतावादी तथा मन व कर्म से मुस्लिम व ईसाई तुष्टिकरणवादी है।

अत : यदि आप चाहते हैं कि :–

सन् **1947** की भाँति भारत माता का भविष्य में और अधिक अंग–भंग न हो और धरती पर हिन्दू सदैव अक्षुण्ण रहे, तो –

- अविलम्ब अखिल भारत हिन्दू महासभा के सदस्य बनिये।
- हिन्दू महासभा को तन–मन व धन से सहयोग दीजिये।
- लोकसभा, विधानसभा आदि सभी चुनावों में सदैव हिन्दू महासभा के प्रत्याशियों को ही अपना मत व समर्थन दीजिये।
- हिन्दू महासभा के मुख्यपत्र साप्ताहिक 'हिन्दूसभा वार्ता' के ग्राहक बनें और बनाइये। वार्षिक शुल्क रू. **150/-**

शेष पृष्ठ 1 का **बड़ी संख्या में आतंकवादी घुसपैठ.......**

लिए खड़े है। उन्होंने आतंकवादियों को पाकिस्तान के समर्थन के बारे में पूछे गये एक सवाल के जवाब में कहा जैसे कि आप जानते है कि हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान, शस्त्र उपलब्ध कराकर आतंकवाद को मदद कर रहा है। वे इनका इस्तेमाल हमारे खिलाफ कर रहे है। सैन्य कमांडर ने कहा कि भारतीय जवान एलओसी पर संघर्ष विराम उल्लंघन की बढती घटनाओं का पाकिस्तानी सेना को कड़ा जवाब दे रहे है। उन्होंने कहा हमने उन्हें मुहंतोड़ जवाब दिया है। इसमे कोई उदारता नहीं बरती जायेगी। लेफ्टिनेंट जनरल सिंह ने कहा वे संघर्ष विराम के उल्लंघन में लिप्त है। इस वर्ष उन्होंने बिना किसी कारण के बड़ी संख्या में संघर्ष विराम का उल्लंघन किया है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से मांग की है कि आंतकियों के प्रशिक्षण शिविरों को ध्वस्त किया जाये।

शेष पृष्ठ 8 का **इतिहास स्वयं को दोहराता.......**

करने की योजना बना रहे थे और ऐसी स्थिति में यह डर था कि स्पेन के नवईसाई बने धर्म–परिवर्तित मुसलमान बढ़ती इस्लामी फौज के पक्ष में बगावत कर सकते हैं। उनकी ईसावेला के प्रति स्वामीभक्ति अभी संदिग्ध थी, इसलिए ईसावेला ने उन्हें पूर्णरूप में स्पेन से निकालने की सोची। फिर एक बड़ी संख्या में मुसलमानों को पड़ोसी मुस्लिम देशों में निकाला गया।१२ कैथोलिक धर्म अदालतों ने भी निर्ममता से पुनः उनसे पूछना प्रारम्भ किया कि तुम्हारा धर्म क्या है? ओह बेशर्म! ओह लज्जाहीन! **उनमें से कोई भी सामने नहीं आया यह बताने कि वह मुसलमान है और अपने धर्म की प्रतिष्ठा के लिए अपना सिर कटाने को तैयार है।** स्पेन के मुसलमानों का अध्याय सदा के लिए बन्द हो गया, भविष्य में विद्वानों की विवेचना के लिए यह भाग्य था या घटना–चक्र! भविष्य में इतिहास लेखन एवं समाज–शास्त्रियों द्वारा विवेचना किये जाने के लिए कि इतिहास किस तरह स्वयं को दुहराता है। **(शेष अगले अंक में)**

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....................................1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 9 का **गांधी जी हिन्दुओं के....**

गई। उसे पाकिस्तान सरकार ने मनोरंजन कर से मुक्त कर दिया। वह पाकिस्तान में सिनेमा घरों में तथा टीवी पर अनेक बार दिखाई गई।

१०. १६ अगस्त १६४६ को मुस्लिम लीग ने DIRECT ACTION अर्थात 'सीधी कार्यवाई' करने की घोषणा की। यह घोषणा पाकिस्तान बनाने के लिए दबाव डालने के लिए थी। इसका गुप्त एजण्डा हिन्दुओं पर अत्याचार करने का था। बंगाल में मियां हसन शहीद सुहरावर्दी मुख्यमंत्री था। उसके संरक्षण में कलकता और नोआखली में हिन्दुओं पर मुसलमानों ने अथाह अत्याचार किए। मुस्लिम लीग के नाम पर हजारों मुसलमानों की विशाल सभा होती। भाषणों में हिन्दुओं पर अत्याचार करने की योजनाएं बनाई जातीं। सभा सम्पन्न होने पर हजारों मुसलमान भूखे भेड़ियों की भान्ति हिन्दुओं पर टूट पड़ते। दस हजार से अधिक हिन्दू मारे गए और पन्द्रह हजार से अधिक जख्मी हुए।

गांधी जी ने इस हत्याकांड की निन्दा तक नहीं की अपितु सुहरावर्दी को कलीन चिट दे दी। बंगाल में हिन्दुओं की हत्याओं के विरोध में बिहार के हिन्दू बहुल क्षेत्रों में प्रतिकार होने लगा। तब गांधी जी और उनके चेलें कांग्रेसी हिन्दुओं को धमकाने चले गए।

११. विभाजन का रक्तपात - मुहम्मद अली जिन्ना ने कहा था कि भावनाएं बहुत भड़की हुई हैं। इसलिए पहले आबादी की अदला बदली कर ली जाए। बाद में सेना और पुलिस का बंटवारा किया जाए, नहीं तो अत्यधिक रक्तपात होगा। यही सुझाव डा. अम्बेडकर तथा सरदार पटेल ने दिया था। परन्तु गांधी जी और नेहरू जी न माने। इसलिए सारा रक्तपात इनके सिर पर है।

१२. १६ अगस्त १६४६ की मुस्लिम लीग की DIRECT ACTION (सीधी कार्रवाई) की घोषणा के परिणाम स्वरूप बंगाल में कलकत्ता और नोआखली में फिर पश्चिमी पंजाब में हिन्दुओं का कत्लेआम तथा लूटपाट शुरू हो गई थी। इसको देखते हुए कुछ अंग्रेज सेनापतियों ने सलाह दी थी कि पाकिस्तान क्षेत्र से सभी हिन्दुओं को भारतीय क्षेत्र में ले आने के बाद ही सेना का विभाजन किया जाए। परन्तु नेहरू, गांधी न माने। उन्हें हिन्दुओं की हत्याओं की और हिन्दू स्त्रियों के अपहरण की बिल्कुल भी परवाह न थी।

१३. पहले तो गांधी जी कहते रहे "पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा" फिर पाकिस्तान का बनना स्वीकार करने के बाद कहते रहे कि जो जहां हैं वहीं रहे। इस कारण से पाकिस्तान के बहुत से हिन्दू जो भारत नहीं आए मुसलमानों द्वारा कत्ल कर दिए गए। पाकिस्तान में मारे जाने वाले हिन्दुओं के प्रति गांधी जी ने कभी सहानुभूति नहीं दिखाई।

१४. गांधी जी का हिन्दू विस्थापितों पर प्रहार - विभाजन के परिणाम स्वरूप पाकिस्तान में हिन्दुओं का नर संहार हुआ। प्रतिक्रिया स्वरूप भारत में भी मुसलमानों की कुछ हत्याएं हुई। ऐसी स्थिति में १२ जनवरी १६४८ को गांधी जी ने एक उपवास आरम्भ किया। उन्होंने धमकी दी कि वे आमरण उपवास रखेंगे यदि उनकी निम्नालिखित सात मांगें पूरी न की गईं।

- ❖ हिन्दू मुसलमानों पर आक्रमण बन्द कर दें।
- ❖ वे ऐसा वातावरण बनाएं कि एक भी मुसलमान असुरक्षा की भावना के कारण भारत न छोड़े।
- ❖ जो मुसलमान पहले ही भारत से पाकिस्तान चले गए हैं, उनको वापिस बुलाना चाहिए और उनके घरों मे पुनः स्थापित करना चाहिए।
- ❖ जो विस्थापित हिन्दू पाकिस्तान से भारत आ गए हैं और मुसलमानों के घरों में रह रहे हैं उनसे वे घर तुरन्त खाली करवाए जाएं तथा वे घर उन घरों के वास्तविक मुसलमान मालिकों को सौंप दिए जाएं।
- ❖ जो मस्जिदें चले गए मुसलमानों द्वारा छोड़ दी गई हैं तथा अब जिनमें विस्थापित हिन्दू रह रहे हैं उन्हें तुरन्त खाली करवाया जाए और सरकारी खर्च पर उनकी मुरम्मत करवाके मुसलमानों को सौंप दी जाएं।
- ❖ विभाजन के दंगों में मुसलमानों को हुई हानि का मुआवजा उन्हें दिया जाए।
- ❖ पाकिस्तान को रोकड़ बाकी का पचपन करोड़ रुपया दिया जाए।

हजारों विस्थापित हिन्दू जो अपने घरों, सम्पत्तियों, माल–असबाबों और परिवार के अनेक सदस्यों को पाकिस्तान में गंवाकर दिल्ली में आए थे और उन्होंने पाकिस्तान चले गए मुसलमानों द्वारा खाली की गई मस्जिदों में शरण ली थी, भारत की पुलिस ने उन असहाय हिन्दू शरणार्थियों को सन १६४८ की जनवरी की कड़कती ठण्ड में बलपूर्वक घसीट–घसीट कर मस्जिदों से बाहर निकाला और खुलें आकाश के नीचे, सनसनाती बर्फीली हवाओं में गांधी जी की मांग पूरी करने के लिए सड़कों पर फेंक दिया। पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर रखा था ऐसी स्थिति में भी गांधी जी की मांग पूरी करने के लिए पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपए दिए गए।

सर रेजिनाल्ड क्रेंडक (SIR REGINALD CRADDOCK) अंग्रेजी सरकार में एक बड़े अफसर थे। वे बर्मा के गवर्नर तथा भारतीय शासकीय सुधार समिति के अध्यक्ष भी रह चुके थे। उन्होंने गांधी जी के सम्बन्ध में लिखा है "यह पूर्ण सत्य है कि शरीर पर नाममात्र कपड़े पहनने वाले उस हिन्दू सन्यासी का उन्मादपूर्ण प्रभाव बुद्धिमान लोगों पर अधिक समय तक नहीं रहता था, परन्तु आज्ञानी और अन्धविश्वासी लोगों पर उसका भयावह प्रभाव होता है। (THE DILEMMA IN INDIA) लेखक सर रेजिनाल्ड क्रेंडक, प्रकाशित लन्दन में, पृष्ठ ११५)

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)—11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

संस्कृत के पक्षधर थे बाबासाहेब

डॉ. मुरली मनोहर जोशी

राष्ट्रहित से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में अतुलनीय योगदान देने के बावजूद आजादी के बाद कई दशकों तक डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर लगभग भुला दिए गए थे, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रपटल पर उन्हें वह स्थान दिलाना शुरू किया है जिसके वह असल में हकदार हैं। डॉ. अम्बेडकर बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे एक विद्वान, अर्थशास्त्री, सामाजिक–धार्मिक सुधारक, राजनीति विज्ञानी और संविधानवेत्ता थे। वे आधुनिक और लोकतांत्रिक भारत के महान रचयिताओं में से एक हैं। सामाजिक छुआछूत को मिटाने और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए उनके अथक संघर्ष को भुलाया नहीं जा सकता। दरअसल उनके व्यक्तित्व के अनेक आयाम हैं, लेकिन यहाँ मैं डॉ. अम्बेडकर संस्कृत के बारे में क्या सोचते थे, इस पर चर्चा करना चाहूँगा।

जब मैं वाजपेयी सरकार में मानव संसाधन विकास मंत्री था तब विभिन्न स्तरों पर संस्कृत और वैदिक गणित आदि मुद्दे उठाए जाते रहे। इस संदर्भ में डॉ. एल.एम. सिंघवी ने मुझे भारत सरकार द्वारा १९५६–५७ में गठित संस्कृत आयोग की रिपोर्ट दिखाई थी। उस रिपोर्ट की कुछ मुख्य बातें इस प्रकार थीं—हिन्दी को अधिकारिक भाषा बनाने के लिए लाए जाने वाले बिल को संविधान सभा में आसानी से मंजूरी नहीं मिली। इस मुद्दे पर चर्चा करने वाले अधिकांश लोगों की सोच तंग थी। हालाँकि कुछ लोगों ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव दिया और डॉ. अम्बेडकर ने भी उसका समर्थन किया। रिपोर्ट आगे कहती है कि नजीरूद्दीन अहमद ने संस्कृत का समर्थन करते हुए प्रस्ताव को सदन के पटल पर रखा। उन्होंने कहा कि एक ऐसे देश में जहाँ ढेरों भाषाएँ बोली जाती हैं, वहाँ यदि एक भाषा को पूरे देश की भाषा बनाना चाहते हैं तो जरूरी है कि वह निष्पक्ष हो। वह किसी भी क्षेत्र की मातृभाषा न हो और सभी के लिए एक जैसी हो। तभी उसे स्वीकारने से किसी एक क्षेत्र को लाभ नहीं होगा और दूसरा क्षेत्र स्वयं को पंगु नहीं समझेगा। संस्कृत में ऐसी क्षमता है। लक्ष्मीकांत मिश्रा, जिन्होने संस्कृत को हिन्दी के स्थान पर अधिकारिक भाषा बनाने के लिए संशोधन प्रस्ताव पेश किया, ने सभा में कहा कि यदि संस्कृत को स्वीकार किया गया तो भाषा को लेकर जिस तरह की मनोवैज्ञानिक जटिलताएँ पैदा की गईं, वे भी मिट जाएँगी। एनसीईआरटी द्वारा मई २००१ में प्रकाशित 'संस्कृत' पत्रिका में एक अखबार में प्रकाशित खबर का उल्लेख करते हुए 'अम्बेडकर ऑन द ऑफिशियल लैंग्वेज ऑफ इंडिया' शीर्षक से एक रिपोर्ट आई थी। इसमें लिखा गया है कि भारत के कानून मंत्री डॉ. अम्बेडकर उन लोगों में शामिल हैं जो संस्कृत को भारतीय संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा देने के हक में हैं। इस पर सवाल उठाने वाले पीटीआई के संवाददाता से डॉ. अम्बेडकर ने पूछा कि संस्कृत में गलत क्या है? संस्कृत को भारत की आधिकारिक भाषा का दर्जा देने के संबंध में संशोधन बिल पर संविधान सभा तब विचार करेगी जब सदन में आधिकारिक भाषा का प्रश्न आएगा। संशोधन बिल कहता है कि संघ की आधिकारिक भाषा संस्कृत होनी चाहिए।

ये जानना दिलचस्प होगा कि डॉ. अम्बेडकर भी चाहते थे कि संस्कृत को भारत की आधिकारिक भाषा बनाने के समर्थन में ऑल इंडिया अनुसूचित जाति फेडरेशन की कार्यकारी कमेटी १० सितम्बर १९४९ के दिन एक प्रस्ताव पास करे लेकिन कार्यकारी कमेटी के युवा सदस्यों द्वारा विरोध की धमकी देने के कारण उसने उस प्रस्ताव को वापस ले लिया। बहरहाल एलके मिश्रा द्वारा पेश संशोधन बिल पर सभा में तीखी बहस के बाद दुर्भाग्यवश गिर गया और इस प्रकार भारत को भाषाई रूप से एकता के सूत्र में पिरोने का बाबासाहेब का सपना अधूरा ही रह गया। मेरे विचार से बाबासाहेब संस्कृत को आधिकारिक भाषा बनाने को लेकर काफी गंभीर थे कि इसे यदि एक बार स्वीकृति मिल गई तो संविधान सभा में आधिकारिक भाषा पर चर्चा के दौरान उपजी कड़वाहट खत्म हो जाएगी। बाबासाहेब भारत को भाषाई लड़ाइयों से मुक्त कर देना चाहते थे। साथ ही वह इस प्राचीन भाषा में मौजूद ज्ञान के भंडार से आम भारतीय को जोड़े रखना चाहते थे। डॉ. अम्बेडकर का संस्कृत से लगाव दिखावा नहीं था। आर्य और अनार्य, ऊँची और निम्न जातियों के संबंध में यूरोप के सिद्धांतों की सच्चाई को जानने की उत्कंठा ने उनमें संस्कृत में रुचि पैदा की थी। इसके लिए उन्होंने वेद सहित कई मौलिक स्रोतों का स्वयं और खुले मन शेष पृष्ठ 10 पर

कबिरा खड़ा बजार में

जैसी करनी, वैसी भरनी

कहा भी गया है कि जो जैसा करेगा वैसा ही भरेगा। कश्मीर के मुसलमानों ने पाक आतंकियों को अपना मसीहा माना, उनकी मदद में अपने ही देश की सेना पर पत्थर बरसाये। लेकिन कश्मीरी मुस्लिमों ने यह नहीं देखा कि इस्लाम के नाम पर उनको बेवकूफ बनाने वाले आतंकी उनको या उनके परिवारों को भी नहीं बख्शते हैं। २७ साल बाद अब स्थिति पूरी तरह बिगड़ चुकी है। कश्मीर के दो बड़े राजनीतिक दल नेशनल कांफ्रेंस और पीडीपी समय समय पर अपने राजनीतिक हितों के लिए आतंकवादियों का समर्थन करते हैं। कश्मीरी मुसलमानों को भड़काने के लिए दोनों ही दलों ने समय समय पर भारतीय सेना के खिलाफ बयानबाजी की है। इन दोनों दलों ने कश्मीर को भारत का हिस्सा नहीं मानने वाली हुर्रियत कांफ्रेंस और आतंकवादियों को समर्थन दे कर ८० फीसदी कश्मीरी मुसलमानों को भारत के खिलाफ कर दिया है। जिस से पाकिस्तान का काम बहुत आसान हो गया है। घाटी के मुसलमान पाकिस्तान से आने वाले आतंकवादियों को अपना मसीहा समझते हैं और मुठभेड़ों के समय उनका बचाव करने के लिए सेना पर पत्थराव करते हैं। अब न तो कश्मीर की स्वायत्तता की लड़ाई है, न कश्मीर में जनमत संग्रह की लड़ाई है, न कश्मीर की आजादी की लड़ाई है, अब इस लड़ाई का स्वरूप बदल चुका है। केवल पाक आतंकी भारत को कमजोर बनाने के लिए उनका प्रयोग मात्र कर रहे हैं। जिसको यहां का मुस्लिम समझ नहीं पा रहा है। कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा छेड़ी गई तथाकथित आजादी की जंग का खामियाजा उन्हीं मुस्लिम परिवारों को भुगतना पड़ा है, जिन्होंने कभी आतंकियों तथा पाकिस्तान के बहकावे में आकर सड़कों पर निकल आजादी समर्थक प्रदर्शनों में भाग लिया था। हालांकि आजादी का सपना तो पूरा नहीं हुआ परंतु परिवारों के कई परिजनों को जीवन से आजादी आवश्य मिल गई। और यह आजादी किसी और ने नहीं बल्कि आतंकियों ने ही दी है मौत के रूप में। धरती के स्वर्ग कश्मीर में फैले इस्लामी आतंकवाद का एक दर्दनाक पहलू यह है कि पाकिस्तान ने कश्मीर में जो अप्रत्यक्ष युद्ध छेड़ा हुआ है, उसके अधिकतर शिकार होने वाले मुस्लिम ही हैं और यह भी सच है कि इस्लाम के नाम पर ही आज पाक प्रशिक्षित आतंकी मुस्लिम युवतियों को अपनी वासना का शिकार बना रहे हैं। हालांकि हिन्दू भी इस आतंक का शिकार हुए हैं। इस्लाम के नाम पर अपना रहनुमा समझने वाले मुस्लिम आज तक उनके शिकार हो रहे हैं। गत २६ सालों के आतंकवाद के दौर के दौरान कश्मीर में हजारों लोग आतंकियों के हाथों मारे गये हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इनमें अधिकतर ४० फीसदी मुस्लिमों के परिवार ही शिकार हुए हैं। असल में आतंक की आग के फैलते ही घाटी के कश्मीरी पंडितों तथा कुछ अन्य हिंदुओं ने पलायन कर देश के अन्य भागों में शरण ले ली। लेकिन मुस्लिमों को लगा कि इस्लाम वाले भला उनका अहित क्यों करेंगे, शायद यह समझ ही न पाये कि आतंक का कोई धर्म होता ही नहीं है। आतंकवादी किसी के भी नहीं हो सकते हैं। इसके चलते मुस्लिम आज भी आतंकी शिकार हो रहे हैं। कश्मीर में आज कोई ऐसा परिवार नहीं है जिसके एक या दो सदस्य आतंकियों या सुरक्षा बलों की मुठभेड़ के दौरान न मारे गये हों। इससे और अधिक चौंकाने वाला तथ्य क्या हो सकता है कि कश्मीर में आतंक के दौर के दौरान जो महिलाएं आतंकियों के सामूहिक बलात्कार की शिकार हुई हैं वे सभी मुस्लिम ही थीं। इस्लामी आतंकवाद से कश्मीर के मुस्लिम कितने त्रस्त हैं इसके कई उदाहरण हैं। आज इसी आतंक के कारण सैंकड़ों परिवार बेघर हैं, सैकड़ों अर्द्ध विधवाएं हैं, जो अपने आप को न सुहागन कहलवा पाती हैं और न ही विधवा, हजारों बच्चे अनाथ हो चुके हैं, जिनके मां बाप को आतंकियों ने मार दिया है।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)—11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 06 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।